THE VICE-CHARIMAN (SHRI KALRAJ MISHRA): Now, we shall take up Short Duration Discussion on the communal violence in Vadodara and other parts of the country. Prof. Alka Balram Kshatriya.

SHORT DURATION DISCUSSION

Communal Violence in Vadodara and other Parts of the Country

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): प्रो॰ अलका क्षत्रिय।

प्रो॰ अलका क्षत्रिय (गुजरात): धन्यवाद, उपसभाध्यक्ष महोदय। आज मैं एक ऐसे विषय पर इस सदन में चर्चा करने जा रही हूं, जो न सिर्फ गुजरात के लिए, बल्कि पूरे देश के लिए आज चिन्ता का विषय बनाया हुआ है। खास करके साम्प्रदायिक दंगे और गुजरात, ये दो शब्द मानो एक पर्याय बन गये हैं? हम जब भी कभी बाहर जाते हैं और कहते हैं कि हम गुजरात से आए हैं तो पहले लोग हमें बड़े आदर से देखते थे और बड़े सम्मान से कहते थे कि आप गांधी जी के गुजरात से आए हैं। ...(व्यवधान)...

श्री अजय मारू (झारखंड): आज भी आदर से देखते है। ...(व्यवधान)...

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: हां, आप देखते हैं। नरेन्द्र मोदी को किस तरह से देखते हैं, वह आप भी जानते हैं। ...(व्यवधान)...

श्री अजय मारू: गुजरात आज इस देश का नम्बर एक प्रदेश है। ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): अजय जी, आप बैठ जाइए। ...(व्यवधान)...

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: हां, नम्बर एक है। ...(व्यवधान)... साम्प्रदायिक दंगों में भी नम्बर एक है। आप यह भूल रहे हैं। ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): आप बैठिए, बैठिए। ...(व्यवधान)... अलका जी, आप बोलिए। ...(व्यवधान)... लाठ जी, आप बैठ जाइए। ...(व्यवधान)... आपका समय आएगा, तो आप बोलेंगे ...(व्यवधान)...

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: आप लोग तो गुजरात के नाम पर कलंक हैं, कलंक। ...(व्यवधान)...

एक माननीय सदस्य: आप तो गुजरात के नाम पर ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): अलका जी, आप बोलिए। ...(व्यवधान)... आपका अवसर आएगा, तो आप बोलेंगे। ...(व्यवधान)... अजय जी, आप बैठिए। ...(व्यवधान)... बैठ

जाइए। ...(व्यवधान)... सब को बोलने का अवसर मिलेगा। ...(व्यवधान)...

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: आप तो सुनते जाइए। ...(व्यवधान)... आपने वहां क्या-क्या खेल खेला है। ...(व्यवधान)... आप वह सुनते जाइए। ...(व्यवधान)... आपने वहां सत्ता के लिए क्या खेल खेला है ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): जिनका नाम है, उनको बोलने का अवसर मिलेगा। ...(व्यवधान)...

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: आपने वहां सत्ता के लिए क्या खेल खेला है ...(व्यवधान)...

श्री सुरेन्द्र लाठ (उड़ीसा): हमें तो इन पर शर्म आती है ...(व्यवधान)...

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: आप वह सुनते जाइए। ...(व्यवधान)... हमें भी शर्म आती है कि हम उस प्रदेश से हैं, जिनके नेता को शर्म ही नहीं है। ...(व्यवधान)... ऐसा घिनौना कार्य करते हैं कि हमें भी शर्म आती है। ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): अब आप अगली बात कहिए। ...(व्यवधान)... आप अपनी बात कहिए। ...(व्यवधान)...

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: महोदय, मैं यह कहना चाहती थी कि जब हम पहले जाते थे, तो लोग हमें गांधी जी के नाम से हमें जानते थे, जो सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। लेकिन आज अगर हम कहते हैं कि हम गुजरात से आए हैं, तो लोग हमें इस तरह से देखते हैं और कहते हैं कि आप उस गुजरात से आए हैं, जहां बार-बार साम्प्रदायिक दंगे होते हैं। इस तरह से आज लोग हमें देखते हैं। गुजरात के नाम पर इन साम्प्रदायिक दंगों का जो धब्बा लग गया है, वह बड़े दुख की बात है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहती हूं कि आज जब गुजरात की बात होती है तो लोग गुजरात के बारे में ऐसा मानते हैं कि आज वहां चारों तरफ हिंसा ही हिंसा है। एक तरह से देखा जाए तो यह बात सच भी है। लोगों में जो बात मानी जाती है, वह गलत नहीं है। लोगों की धारणाएं भी सच हैं। सिर्फ लोगों की ही नहीं, मीडिया ने भी जो यह बात कही है, वह भी सच है। मैं इसलिए कहना चाहती हूं कि अगर इसके लिए कोई जिम्मेदार है, तो सिर्फ गुजरात की सरकार ही जिम्मेदार है।

महोदय, हमें तो लगता हैं कि गुजरात की राज्य सरकार यह चाहती है कि गुजरात को दंगों का राज्य बनाया जाए, क्योंकि उससे उन्हें राजकीय फायदा होता है। वह चाहती है कि गुजरात में साम्प्रदायिक दंगे चलते रहें। इसमें उनको सिर्फ अपना वोट बैंक दिखाई देता है। चाहे वह गुजरात के 2002 के दंगे हों, चाहे उसके बाद के, अभी जो गुजरात के वड़ोदरा में हुए दंगे हों, आप देखेंगे कि उसमें गुजरात की भाजपा सरकार को सिर्फ अपना वोट बैंक दिखाई देता है और वोट बैंक

दिखाने की वज़ह से 2002 में भी और आज भी गुजरात की सरकार या वहां का प्रशासन इसको रोकने में निष्फल रहा है। मैं तो यह कहती हूं कि वह बिल्कुल ही निष्क्रिय रहा है। यह भी एक हकीकत है। गुजरात सरकार ने जिस तरह से इन दंगों को भड़काया है। ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): आप बोलिए। ...(व्यवधान)... अब आप बोलिए। ...(व्यवधान)...

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: अगर आप पहले बोलना चाहते हैं, तो बोलिए। ...(व्यवधान)... फिर मैं उसका जवाब दूंगी। ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): आप उधर मत देखिए, आप बोलिए। ...(व्यवधान)...

प्रो॰ राम देव भंडारी (बिहार): सर, एक महिला बोल रही हैं, इन्हें चाहिए कि ये इनको इन्टरप्ट नहीं करें। ...(व्यवधान)...

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: मुझे साथी-सहयोगियों की जरूरत नहीं है। ...(व्यवधान)... मैं अकेली ही आप लोगों के लिए काफी हूं। ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): एक सम्मानित सदस्या यहां बोल रही हैं। ...(व्यवधान)... पाणि जी, शांत रहिए। ...(व्यवधान)...

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: मैं अकेली आप लोगों के लिए भारी पड़ूंगी। आप चिन्ता मत कीजिए ...(व्यवधान)...

एक माननीय सदस्या: हम सारे हैं यहां पर, ये अकेली नहीं हैं। ...(व्यवधान)...

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: श्रीमान, मैं यह कहना चाहती हूं कि गुजरात की सरकार ने ...(व्यवधान)...

श्री रुद्रनारायण पाणि (उड़ीसा): महोदय, यह कितना गम्भीर विषय है। ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): कृपया शांत रहिए ...(व्यवधान)... आप बैठ जाइए। ...(व्यवधान)... वे बोलेंगी। ...(व्यवधान)... यहां से भी बोलने वाले लोग हैं। ...(व्यवधान)...

श्री रुद्र नारायण पाणि: महोदय मैं तो इनकी भलाई के लिए कह रहा हूं। ...(व्यवधान)...

उपाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): आप बैठ जाइए ...(व्यवधान)... वे अपनी भलाई देख रही हैं। ...(व्यवधान)... आप बैठ जाइए। ...(व्यवधान)...

श्री रुद्रनारायण पाणि: कम-से-कम हाऊस में मैम्बर उपस्थित रहें। ...(व्यवधान)... महोदय, मैं तो इनकी भलाई के लिए कह रहा हूं। ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): अब आप बैठ जाइए। ...(**व्यवधान**)... आप बैठ जाइए। ...(**व्यवधान**)...

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: हमारी भलाई किसमें है, हम यह अच्छी तरह से जानते हैं। ...(**व्यवधान**)... आप हमें यह यह समझाइए मत कि हमारी भलाई किसमें है। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): बैठ जाइए। ...(**व्यवधान**)... आप बैठिए। ...(**व्यवधान**)... पाणि जी, बैठिए। ...(**व्यवधान**)...आप बोलिए। ...(**व्यवधान**)... आप बैठ जाइए। ...(**व्यवधान**)...

श्री रुद्रनारायण पाणि: यह कितना गम्भीर विषय है। ...(**व्यवधान**)...

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: हमें किसमें क्या कहना है, वह आता है। आप हमें मत समझाइए। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): आप बैठ जाइए ...(**व्यवधान**)... अलका जी, आप बोलिए। ...(**व्यवधान**)...

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: आपकी पार्टी वालों ने सिखाया है कि राज कैसे किया जाता है। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): आप बैठ जाइए ...(**व्यवधान**)... आप बोलिए। ...(**व्यवधान**)...

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: महोदय, सरकार सिर्फ निहत्थे लोगों पर गोलियां चलाना जानती है। सरकार लाशों पर अपनी राजनीति करना चाहती है, लाशों के जरिए वह अपना वोट बैंक बनाना चाहती है, यह कहना कोई गलत नहीं होगा।

महोदय, अभी गोधरा कांड की आग ठंडी भी नहीं हुई थी, अभी दोनों समुदायों के बीच जो दरार थी वह पट भी नहीं पाई थी, कि वड़ोदरा में फिर हिंसा भड़क उठी। एक दरगाह को गिराने की बात अगर विकास की बात होती, तब तो समझा जा सकता था, लेकिन यह विकास की बात नहीं थी। विकास से कभी किसी को कोई परहेज नहीं होता अगर किसी गांव का, किसी शहर का, किसी राज्य का या देश का विकास होता है, तो भला उससे कौन मना करेगा? यहां तो दरगाह ढहाकर विकास नहीं करना था, यहां तो सरकार को इसके जरिए राजनीति करनी थी और इसी की वजह से उन्होंने निर्ममता के साथ इस दरगाह को ढहा दिया था, उसे नेस्तनाबूद कर दिया था। अगर सरकार चाहती तो इस मसले को आपस में मिलजुल कर, बैठकर भी सुलझा सकती थी। इसके लिए तो उस समुदाय के लोग भी तैयार हुए थे। उसका जो सुपर स्ट्रक्चर था उसे हटाने के लिए वे लोग तैयार थे। इसमें पहले समझौता हुआ, लेकिन बाद में किस के दबाव में आकर यह काम हुआ? इस बारे में क्या कोई हमें बता सकता है? अगर यह कोई झगड़ा था, तो प्रशासन और एक समुदाय के बीच का झगड़ा था, लेकिन यह दो समुदायों के बीच में झगड़ा कैसे हो गया? वहां

वीएचपी के लोग कैसे हाजिर थे? उन्होंने पत्थर क्यों फेंका? अगर इस सवाल का जवाब मिल जाता है, तो पूरा जो वड़ोदरा का कांड हुआ, वह क्यों हुआ, इसको सब लोग जान जाएंगे और यह एक खुली किताब की तरह सब के सामने आ जाएगा कि यह सब किसने करवाया और क्यों हुआ। बार-बार यह जो गुजरात में सांप्रदायिक दंगे हो रहे हैं, इसके पीछे किसका हाथ है, यह सब लोग जानते हैं, लेकिन सिर्फ वोट की राजनीति की वजह से यह लोग चुप्पी साधे हुए हैं। मैं कहना चाहती हूं कि एक बार आप चुनाव जीत जाएंगे, दूसरी बार जीत जाएंगे, लेकिन इसके बाद क्या होगा? क्या आप जिंदा लोगों पर राज करना चाहते हैं या लाशों पर राज करना चाहते हैं? जब लाशों के ढेर लग जाएंगे, विकास बिल्कुल ही नहीं होगा, तब आप क्या, किस पर राज करेंगे? आप मुझे यह बता सकते हैं।

महोदय, आज गुजरात की हालत क्या है। हमारे साथी कह रहे थे कि गुजरात नंबर वन है। हां, नंबर एक है मगर नंबर एक किसमें है? दंगों के लिए गुजरात नंबर एक जाना जाता है। गुजरात में विकास बिल्कुल नहीं हो रहा है। अगर ये लोग कहते हैं कि विकास हो रहा है, तो बाहर से जो भी निवेश हो रहा था वह कम क्यों हो रहा है? गुजरात के कारखाने बंद क्यों हो रहे हैं? गुजरात में जो लोग बेकार हो रहे हैं, वे बेकार क्यों हो रहे हैं? आप मुझे यह बता सकते हैं। फिर भी ये कह रहे हैं कि गुजरात में जो हो रहा है, वह अच्छा हो रहा है। कौन कह सकता है कि गुजरात में जो हो रहा है, वह अच्छा हो रहा है। मैं तो बिल्कुल यह कहूंगी कि जब वड़ोदरा के अंदर यह दंगे हो रहे थे, तो केन्द्र के गृह राज्य मंत्री यहां से वहां पहुंचे थे, लेकिन गुजरात के मुख्य मंत्री के पास समय नहीं था कि वह अहमदाबाद से वड़ोदरा पहुंच पाते। जब केन्द्र सरकार ने उनको ताकीद किया और कहा कि दंगे आपको रोकना होंगे, हम ऐसे चलाएंगे नहीं, तब जाकर मुख्य मंत्री को वहां जाना पड़ा और अहमदाबाद से वड़ोदरा पहुंचते-पहुंचते हमारे गुजरात के मुख्य मंत्री को तीन दिन लग गए। यह तीन दिन में अहमदाबाद से वड़ोदरा तक का उन्होंने सफर पूरा किया और तीन दिन बाद वहां पहुंचे हैं। यह तो वह कहावत हुई कि ...(व्यवधान)...

श्री जयन्ती लाल बरोट (गुजरात): डोडा में केन्द्र के कौन मंत्री गए थे?...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): प्लीज। आपको बोलना है, तो बोलते समय अपनी बात बोल लेना।

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: सर जब रोम जल रहा था, तो नीरो बांसुरी बजा रहा था, ऐसी बात है और इस तरह की हमारे गुजरात के मुख्य मंत्री बात करते हैं। मैं यह कहना चाहती हूं कि हमारे प्रधानमंत्री जी ने जो स्टेप्स लिए,उसी की वजह से, उसी की बदौलत गुजरात में, वड़ोदरा में इतनी जल्दी शांति स्थापित हुई, वरना वर्ष 2002 के गोधरा कांड के बाद जिस तरह का माहौल पूरे गुजरात के अंदर बन गया था वही माहौल बनने की कतार पर गुजरात को खड़ा कर दिया था। केन्द्र सरकार ने जो अपना बल भेजा, उसकी वजह से वड़ोदरा के अंदर शांति स्थापित हो सकी।

महोदय, मैं अनुरोध करुंगी कि गुजरात में आज जो हिंसा की आंधी चली है, उससे गुजरात को बचा लीजिए। गुजरात को आप बचा लीजिए, वरना गुजरात कहां जाएगा, कह नहीं सकते। यह सिर्फ गुजरात का सवाल नहीं है, पूरे देश का सवाल है। अगर यह आंधी एक बार चली, तो पूरे देश में चलेगी और पूरा देश कहां जाएगा, यह कौन नहीं जानता। इसलिए मैं कहती हूं कि देश को बचा लीजिए। गुजरात की जनता अमन पसंद जनता है, वह शांति चाहती है। गुजरात की भूमि एक यशस्वी भूमि है, जहां गांधी पैदा हुए हैं, जिन्होंने पूरी दुनिया को सत्य और अहिंसा का संदेश दिया है। जहां सरदार पटेल पैदा हुए हैं, जिन्होंने पूरे भारत को एक बनाया था, वे लौहपुरुष थे, इन सपूतों की वजह से गुजरात जाना जाना चाहिए, न कि आज के हमारे मुख्य मंत्री *के नाम से गुजरात जाना जाना चाहिए। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): अगर कोई सदन का सदस्य नहीं है तो आप उसका नाम नहीं ले सकतीं। ...(**व्यवधान**)...

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: इन लोगों ने उन्हें गुजरात का नम्बर एक मुख्य मंत्री कहा है। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): नाम रिकार्ड में नहीं जाएगा, आप बैठ जाइए। ...(**व्यवधान**)...

प्रो॰ राम देव भंडारी: महोदय, यह अन्याय है कि एक महिला के विरुद्ध इतने पुरुष खड़े हो जाते हैं। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): आप बैठ जाइए। रिकार्ड में नाम नहीं जाएगा, आप बैठिए। ...(**व्यवधान**)...

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: उपसभाध्यक्ष महोदय, तीन दिन बाद गुजरात के मुख्य मंत्री वड़ोदरा गए और उन्होंने कहा कि जो भी हिंसा भड़काएगा ...(**व्यवधान**)...

THE MINISTER OF HEAVY INDUSTRIES AND PUBLIC ENTERPRISES (SHRI SONTOSH MOHAN DEV): Sir, I have to lay on the Table of the House a statement at 4 o'clock. It will take just a minute. *(Interruptions)*...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): एक मिनट अलका जी।

SHRI SONTOSH MOHAN DEV: *

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): संतोष जी, एक मिनट। आपको स्टेटमेंट 4:00 बजे देना चाहिए था। ...(**व्यवधान**)...

*Not recorded.

SHRIMATI BRINDA KARAT (West Bengal): What is this? Sir, we really object to this. *(Interruptions)*.... The hon. Member is speaking on Vadodara, he is coming and interrupting. Is this the seriousness the Government has towards Gujarat? *(Interruptions)*... What is this? *(Interruptions)*...

SHRI SHAHID SIDDIQUI (Uttar Pradesh): Sir, this is a very serious matter. *(Interruptions)*...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): अब आप अपना यह स्टेटमेंट हाउस उठने से पहले करेंगे। ...(व्यवधान)... अब अलका जी का भाषण समाप्त होने दीजिए। ...(व्यवधान)...

SHRIMATI BRINDA KARAT: What does this mean? Anybody can come and disrupt the debate like this! *(Interruptions)*... Is this the seriousness with which the Government is moving in this matter? ...*(Interruptions)*...

श्री यशवंत सिन्हा (झारखण्ड): मंत्री जी ने जो कहा है, बिना अनुमति के खड़े होकर, पहले तो उसको प्रोसिडिंग से निकलवाइए।

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): माननीय मंत्री जी ने जो स्टेटमेंट ले किया है, उसको अभी रिकार्ड से निकाल दीजिए। बाद में जब हाउस उठने से पहले ये अपना स्टेटमेंट ले करेंगे, उसको रिकार्ड में लिया जाएगा।

SHRIMATI BRINDA KARAT: Sir, how did you give permission to the Minister to interrupt the discussion like this? ...*(Interruptions)*... It never happened, Sir. ...*(Interruptions)*...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): माननीय मंत्री जी अपना स्टेटमेंट हाउस उठने से पहले करेंगे। अब प्रो॰ अलका जी अपना भाषण जारी रखेंगी।

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: उपसभाध्यक्ष महोदय, गुजरात के मुख्य मंत्री तीन दिन बाद वड़ोदरा जाकर कहते हैं कि किसी भी हिंसा को हम बर्दाश्त नहीं करेंगे और जो भी व्यक्ति हिंसा करेगा, उसे बख्शा नहीं जाएगा। इस बारे में एक शायर की दो पंक्तियां मैं कहना चाहती हूं:-

उनका दर्द को सहलाने का तरीका देखा

वो मरहम भी लगाते हैं, कांटों की नोक से।

गुजरात के मुख्य मंत्री का यही तरीका है, आप देखिए, *वे मरहम भी लगाते हैं तो कांटों की नोक से।*

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहती हूं कि गुजरात को हिंसा की आंधी की गलियों से बचा लीजिए, मैं इसे बार-बार कहना चाहती हूं। इसके साथ ही मैं एक दूसरी बात भी कहना चाहती हूं कि अगर प्रशासन चाहे तो किसी भी दंगे को रोक सकता है। चाहे गुजरात की बात हो या उत्तर प्रदेश की बात हो, उसमें भी यही बात आई थी। अलीगढ़ का प्रशासन और सरकार भी वहां फेअर नहीं थी और वहां भी अगर प्रशासन ठीक तरह से काम करता तो हम वहां भी दंगे रोक सकते थे। लेकिन वह भी रोक नहीं पाए। वहां के एमएलए का लड़का मारा गया था, प्रशासन ने यह भी नहीं देखा कि वह लड़का कौन सी जाति का है, कौन से धर्म का है। इन सब बातों की शिनाख्त भी नहीं की गई, उसके अमुक सम्प्रदाय का होते हुए भी उसे दफना दिया गया, जबकि उस सम्प्रदाय में कभी दफ़नाया नहीं जाता है। इसलिए मैं आपसे कहना चाहती हूं ...(व्यवधान) मैं आपसे कहना चाहती हूं ...(व्यवधान)

श्री शाहिद सिद्दिकी: आप यह किसके ...(व्यवधान)

[جناب شاہد صدیقی : آپ یہ کس کے ... مداخلت]†

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: यह दोनों जातियों में है ...(व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): आप दोनों बैठ जाइए ...(व्यवधान) यहां गंभीर चर्चा हो रही है, इसलिए इसे गंभीरतापूर्वक लें तो ज्यादा ठीक रहेगा। आपको बोलना है तो बाद में बोलिए, सभी लोग अपनी बात कह सकते हैं।

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: इसलिए मैं कहना चाहती हूं कि अगर प्रशासन चाहे, पुलिस चाहे और सरकार चाहे तो ये दंगे रुक सकते हैं, लेकिन जरूरत इस बात की है कि क्या सरकार और प्रशासन इसके लिए सख्त कदम उठाने को तैयार हैं? क्या इन दंगों को रोकने की उनकी तैयारी है? क्या उनकी मंशा है? और अगर मैं गुजरात के बारे में कहूं तो मैं यह कहूंगी कि सरकार की मंशा में खोट है और इसी वजह से ये दंगे रुक नहीं सकते। बार-बार दंगे होते रहते हैं। मैं आपको यह कहना चाहती हूं कि दंगे एक सभ्य समाज की निशानी नहीं हैं। यह न केवल दो व्यक्तियों और दो सम्प्रदायों की दूरियों को बढ़ाते हैं, न केवल दो व्यक्तियों, दो सम्प्रदायों या किसी गांव को नुकसान होता है, बल्कि इससे पूरे देश को नुकसान होता है। पूरे देश में अराजकता फैलती है।

[श्री उपसभापति पीठासीन हुए।]

इतना ही नहीं, साथ ही साथ विदेशों में भी हमारी बदनामी होती है। देश के लिए बाहर से निवेश प्राप्त नहीं होता है और इससे हमारे विकास की गति रुक सकती है। अब आप देखिए, एक

†Transliteration in Urdu Script.

कानून है कि 1947 से पहले बना साम्प्रदायिक मंदिर अथवा मस्जिद अथवा कोई भी इमारत हो, उसे हटाया नहीं जा सकता। इसके बावजूद भी गुजरात सरकार ने इस बात को नहीं माना और डेढ़-दो सौ साल पुरानी दरगाह को हटाकर ही उन्होंने दम लिया। इसी की वजह से वहां पर साम्प्रदायिक दंगे भड़के।

उपसभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से इस सदन को और पूरे देश को बताना चाहती हूं कि हमें बख्श दीजिए, गुजरात के लोग शांति चाहते हैं। आप चाहते हैं तो आप शासन करिए, लेकिन ज़िन्दा लोगों पर शासन करने की सोचिए, आप मुर्दों के ढेरों पर शासन करने की बात क्यों सोचते हैं? हम चाहते हैं कि हमें लोग गांधी के गुजरात से जानें, हमें लोग सरदार पटेल के गुजरात से जानें, शांति के गुजरात से जानें और इसमें आप हमारा साथ दीजिए। मैं यहां पर इधर के पक्ष वालों या उधर के विपक्ष वालों की बात नहीं कर रही हूं, पूरे देश की ...(व्यवधान)

श्री जयन्ती लाल बरोट: गुजरात के लोग इंदिरा गांधी को पसंद नहीं करते, महात्मा गांधी को पसंद करते हैं ...(व्यवधान)

श्री उपसभापति: आप बैठिए। जब आपका नाम लेंगे जब बोलिएगा, लेकिन अभी आप उनको बोलने दीजिए।

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: यह बार-बार होता है जब भी वहां दंगे होते हैं...उपसभापति जी, मैं आपके माध्यम से इस सदन से एक सवाल और भी पूछना चाहती हूं कि हमेशा सिर्फ गुजरात के अन्दर ही प्रशासन पर उंगली क्यों उठती है? मैं यह नहीं कहती कि यह सब बीजेपी की सरकार करवा रही है, लेकिन मैं यह कहती हूं कि यह बीजेपी की गुजरात सरकार करवा रही है। अन्य दूसरे राज्यों में भी बीजेपी का शासन है, लेकिन वहां यह सब नहीं होता। जब से गुजरात में बीजेपी की सरकार शासन में आई है और इसमें भी जबसे हाल ही में चुने गए मुख्य मंत्री शासन में आए हैं, तब से ये दंगे हो रहे हैं।

इसकी एक वजह यह भी है कि अभी हाल ही में जो राजनीतिक हालात बदले हैं, उसमें उनको कुछ और ही नज़र आ रहा है। उनकी मंशा सिर्फ गुजरात के मुख्यमंत्री पद पर बने रहने की ही नहीं है, उनको अभी दिल्ली दिखाई दे रहा है और दिल्ली दिखाई देने की वजह से ये साम्प्रदायिक हिंसा की घटनाएं और भी बढ़ती जा रही हैं। इसलिए मैं आप सभी लोगों से कहती हूं कि गुजरात की हिंसा को रोकने में हमारा साथ दीजिए, गुजरात के लोगों को शांति दिलवाने में हमारा साथ दीजिए। इन्हीं बातों को कहते हुए मैं पूरे सदन को यह कहना चाहूंगी कि आप हमारे साथ रहिए, अगर हम सभी साथ मिल कर चलेंगे तो गुजरात में फिर से शांति बहाल कर सकते हैं। जय हिन्द।

SHRI SHAHID SIDDIQUI: Sir, I want a clarification. Is this a

discussion on Gujarat and Vadodara or we can discuss about other places also? *Interruptions)* This discussion is on Gujarat...That is the decision. (*Interruptions*)

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: नहीं, नहीं। आप पहले पढ़ लीजिए, आप पढ़ लीजिए।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, I will clarify. The discussion is on the communal violence in Vadodara and other parts of the country.

श्री विजय कुमार रूपाणी (गुजरात): उपसभापति महोदय, मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे पहली बार बोलने का मौका दिया। पहले तो अलका जी ने जो शेर कहा, मैं भी कहता हूं कि:

"वह कत्ल भी करते हैं तो कुछ नहीं होता
और हम आहें भी भरते हैं तो बदनाम करते

मैं अलका जी से पूछना चाहता हूं कि वे कत्ल भी करते हैं तो कुछ नहीं होता और हम आहें भी भरते हैं तो बदनाम करते हैं, सिर्फ गुजरात को ही बदनाम कर रहे हैं आप लोग। ...(**व्यवधान**)...

एक सम्मानित सदस्य: यह मेडन स्पीच है ...(**व्यवधान**)

श्री विजय कुमार रूपाणी: दूसरी बात यह है कि अलका जी ने अपने भाषण में बता दिया कि गुजरात में आने वाले चुनाव में भारतीय जनता पार्टी जीतेगी, यह उन्होंने विश्वास के साथ कह दिया है। यह हमारे लिए खुशी की बात है। ...(**व्यवधान**)

श्री उपसभापति: अलका जी, ऐसे मुश्किल हो जाता है। ...(**व्यवधान**)

श्री विजय कुमार रूपाणी: तीसरी बात, उन्होंने बताया कि गुजरात में कितना डवलपमेंट हो रहा है। नम्बर वन मुख्य मंत्री भी उन्होंने स्वीकारा कि गुजरात के मुख्य मंत्री नम्बर वन हैं। तो मैं यह कहना चाहता हूं कि जिस तरीके से ...(**व्यवधान**)

श्री उपसभापति: अलका जी, आप बैठकर इंटरप्ट नहीं करिए If you want to intervene, then intervene. क्योंकि डिबेट चलना है। The House has to rise. ...(*Interruptions*)... It is not between two of you. ...(*Interruptions*)... The entire House has to listen to the debate.

श्री सुरेश भारद्वाज (हिमाचल प्रदेश): सर, इनकी मेडन स्पीच है। ...(**व्यवधान**)

श्री उपसभापति: वे जो कहते हैं उसको रोकना ...(**व्यवधान**) आपका नाम कोट करें तो, you bring it to my notice. I will protect you, but do not go on interupting. Otherwise, we will not be able to finish the debate. जब आपत्ति होगी तो, we

will follow the rules, we will see to it. उनका नाम मत लीजिए, उनकी मेडन स्पीच है।

श्री विजय कुमार रूपाणी: गुजरात में डवलपमेंट वर्क बहुत अच्छी तरह से चल रहा है। मैं कल दिल्ली की चर्चा सुन रहा था। दिल्ली में जिस तरीके से अतिक्रमण को हटाना और सुप्रीम कोर्ट ने जो कुछ किया है और सारे देश की चिंता यह अतिक्रमण की समस्या पर चल रही है, तो गुजरात में गुजरात सरकार ने ठोस कदम उठाकर अतिक्रमण हटाना निश्चित किया है। यह बरोला में कोई पहला बना हुआ नहीं है। पिछले दो साल से गुजरात में सभी म्युनिसिपैलिटी और कारपोरेशन ने अतिक्रमण हटाने का एक कार्यक्रम गुजरात सरकार ने मगनता से किया है। मैं आज कह रहा हूं, आप जो बतला रहे थे कि गुजरात का मिजाज अलग है। गांधी का गुजरात, जब गांधी जी साउथ अफ्रीका गए थे तो डरबिन में एक छोटी सी बात पर उन्होंने सत्याग्रह किया और अपनी बात रखी और सारी दुनिया को उनकी बात माननी पड़ी। सरदार पटेल ने भी जो बात अपने हाथ में ली थी, वे सभी बातें लौहखंडी पुरुष के नाते करते थे, करवाते थे इसलिए आज हम लोग उनको लौहखंडी पुरुष के रूप में पहचानते हैं। नवनिर्माण का आंदोलन भ्रष्टाचार के खिलाफ गुजरात में हुआ था और गुजरात के छात्रों ने जो बात उठाई थी और सारे देश में उनकी चिंगारी से वहां ज्वाला फूटी थी और गुजरात में पहली बात छात्रों ने इतिहास बनाया और कांग्रेस की भ्रष्ट सरकार को उन्होंने हटाया था और भ्रष्टाचार के खिलाफ वहां आंदोलन हुआ था। यह वही गुजरात आज आगे बढ़ रहा है। गुजरात की सरकार लौहखंडी पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के आदर्श को लेकर गुजरात में मगनता से एंक्रोचमेंट हटाने की बात से आगे बढ़ रही है। वड़ोदरा में जो घटना हुई, यह पहला ...(**व्यवधान**)... वहां उन्होंने तीन हजार तीन सौ, सिर्फ वड़ोदरा में अतिक्रमण हटाये हैं। एक जो घटना घटी, दरगाह को हटाया, वहां तीन हजार तीन सौ अतिक्रमण हटाये हैं। वहां से 42 हिन्दू धर्म-स्थल हटाये हैं और मैं आज साफ तौर पर कहना चाहता हूं कि गुजरात की सरकार जो काम कर रही है वह जनहित के आधार पर, जन समुदाय के लिए प्रत्येक विभाग का संकलन करके, कानूनी मर्यादा में, कानूनी तरीकों से, किसी भी प्रकार के भेदभाव रहित, चेतावनी देकर, नोटिस की कार्यवाही कर के कार्यवाही की है। यह सिर्फ वड़ोदरा में नहीं है, गुजरात के सभी शहरों में यह कार्यक्रम चलता है। जिस दिन वड़ोदरा में यह घटना घटी, उसके पांच दिन पहले, 24 तारीख को जो-जो अतिक्रमण थे, उन लोगों को वड़ोदरा निगम ने, कारपोरेशन ने बुलाया था, वहां मीटिंग रखी थी। एक्चुअल जो दरगाह हटायी, उस दरगाह का कोई कानूनी आधार नहीं है, उसकी कोई कानून के आधार पर कमेटी नहीं है, कोई रजिस्टर्ड ट्रस्ट भी नहीं है, फिर भी, जनहित के खातिर वहां के जन समुदाय के जो आज्ञावान लोग थे, उनको बुलाया, उनके साथ मीटिंग की। वहां की म्युनिसिपल कारपोरेशन के कमिश्नर, वहां के पुलिस कमिश्नर, सभी ने साथ में बैठकर वहां चर्चा की कि वड़ोदरा को अच्छा शहर बनाना है। अच्छा शहर बनाने के लिए अतिक्रमण की कोई जात-पात नहीं होती है। अतिक्रमण को हटाना खुद सेक्युलर बात है। मैं

यहां हिन्दू-मुसलमान की चर्चा करने वाला नहीं हूं। गुजरात सरकार हिन्दू-मुसलमान की कोई बात नहीं कर रही है। मैंने बताया है कि 42 हिन्दू धर्म-स्थान वड़ोदरा में हटाये गये हैं और मुस्लिम सिर्फ 6 स्थानों पर हटाये गये हैं। फिर भी, दंगा करने वाले लोग, जो कौम में होते हैं, उन लोगों के दबाव में, वहां के आज्ञावान लोगों को बुलाया था, उन्होंने समाधान के फारमूले को स्वीकार नहीं किया था। उन्होंने ऐसा बताया कि अगर अतिक्रमण को हटायेंगे, तो दंगा होगा और यहां खून-खराबा भी होगा, लेकिन पूरे गुजरात में अतिक्रमण हटाने का काम चल रहा है, मैंने सिर्फ वड़ोदरा की बात बताई कि 3300 अतिक्रमण हटाये हैं और हमारी सरकार की पालिसी है कि हम लोग प्राईवेट प्रिमाइसिज़ में तो इल्लीगल कंस्ट्रक्शन है, उसको नहीं हटाते हैं, लेकिन तो रास्ते पर इल्लीगल कंस्ट्रक्शन है, जिससे ट्रेफिक को असुविधा होती है, उनको हटाना चाहिए यह तय किया है। वहां पर जो गवर्नमेंट लैंड है, वहां पर जो म्युनिसिपल लैंड है, वहां पर जो लैंड माफिया हैं, जो यह समझते हैं कि सब भूमि गोपाल की है, वहां पर कंस्ट्रक्शन करते हैं, उनको हम लोग बढ़ावा नहीं देना चाहते हैं। इसलिए जो गवर्नमेंट लैंड है, जो म्युनिसिपल लैंड है और जो रास्ते में अतिक्रमण है, उनको ही हटाने का गुजरात सरकार ने फैसला किया है और पूरे गुजरात में इसकी मूवमेंट चल रही है। मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारे गुजरात के मुख्य मंत्री और हमारी सरकार कोई जाति-पांति या कोई वोट बैंक के आधार पर कार्यवाही नहीं कर रही है। यह तो थैंकलैस जॉब है, इससे तो सरकार के खिलाफ लोग होंगे, फिर भी, हम कर रहे हैं। ऐसा दिल्ली में नहीं कर सके हैं और इसके लिए बिल लाना पड़ा है। वहां हम अतिक्रमण को हटा रहे हैं और इसलिए हटा रहे हैं कि अच्छा गुजरात बनाना है, अच्छा देश बनाना है, तो ठोस कदम उठाने चाहिए और वोट बैंक की राजनीति नहीं करनी चाहिए। इसलिए वहां अतिक्रमण हटाने का कार्यक्रम चल रहा है। मैं आपको बताना चाहता हूं कि जब अतिक्रमण हटाने की बात थी, इससे पहले वहां लोगों को लीगली नोटिस भी दिये गये हैं और उनको बताया गया है कि यदि आप अतिक्रमण नहीं हटायेंगे, तो सप्ताह के बाद आकर कारपोरेशन अतिक्रमण हटायेगी। अगर आपके पास कोई नक्करी बात है, पुराना है, आपकी अपनी खुद प्रापर्टी है, तो आप आकर कारपोरेशन में ऐवीडेंस दे दीजिए और अपनी बात रखिये। लेकिन कोई आया नहीं, फिर कार्यक्रम स्टार्ट हुआ। जब 11 बजे अतिक्रमण हटाने के लिए पुलिस के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ, 42 हिन्दू धर्म स्थान हटाये गये, तो कोई दंगा नहीं हुआ और जबरदस्ती में हटाये गये हैं, वहां के लोग सहमत भी नहीं थे, फिर भी हटाये गये हैं, लेकिन एक दरगाह के पास, जिसके बारे में, मैंने पहले बताया, जो दंगा करने वाले लोग, जो उस मैंटेलिटी के लोग होते हैं। वे लोग गर्म हो गए, उन्होंने वहां नारेबाजी की, पुलिस पर पथराव किया और बाद में दो घंटे वहां सब कुछ चला। उसके बाद बदनसीबी से वहां फायरिंग हुई और उसमें दो लोग मारे गए। इसके बाद सारे बड़ौदा में सरकार ने कर्फ्यू लगा दिया ताकि इसके चलते बाकी निर्दोष लोगों की जान को खतरा न हो जाए। दूसरे दिन रात को आठ बजे वहां लाइट चली गयी, बिजली चली गयी और वहां अफवाहें फैल गयीं। इस पर दोनों धर्मों के लोग वहां इकट्ठा हो गए

और अफवाहों के कारण वहां आगजनी हुई जिसमें एक सुमो गाड़ी जला दी गयी और एक मुस्लिम को भी जलाया गया। वह भी कमनसीबी घटना थी। बाद में तुरंत ही वहां के पुलिस कमिश्नर वहां पहुंच गए और जितने अफसर थे, वे सब लोग स्थिति का जायजा लेने के लिए और स्थिति को कंट्रोल करने के लिए तुरंत पहुंचे और रात भर में स्थिति कंट्रोल में आ गयी। सर, दंगे तो पहले भी होते थे। आपकी सरकार थी, तब भी गुजरात में इससे ज्यादा दंगे हुए हैं। गुजरात में 1965 से लेकर 1995 तक दंगे हुए हैं और 1995 के बाद बीजेपी की सरकार आयी। जो आप चुनाव की बात बता रही थीं कि चुनाव के कारण और राजनीति के कारण वहां दंगे हो रहे हैं। मैं कहना चाहता हूं कि गुजरात में सरकार आने के बाद तीन साल बीत गए हैं, तीन साल में गुजरात में एक दंगा नहीं हुआ है। गुजरात में जितने चुनाव हुए, हमारे माननीय अहमद पटेल जी भी यहां मौजूद हैं, उनकी कॉन्स्टीट्यूएंसी बरूच में आमोध है जहां बहुत अधिक मुस्लिम अल्पसंख्यक लोग रहते हैं, वहां भी चुनाव में बीजेपी को दो-तिहाई से ज्यादा वोट मुसलमानों ने दिया है और वहां के सब म्युनिसिपल और पंचायत के चुनावों में हम लोग जीत गए थे। ...(व्यवधान)...

श्री अहमद पटेल (गुजरात): सर, मैं बीच में टोकना नहीं चाहता क्योंकि माननीय सदस्य पहली बार बोल रहे हैं, मेडन स्पीच है लेकिन मेरे ख्याल से जो वे ...(व्यवधान)...

श्री विजय कुमार रूपाणी: आमोध में तो अहमद भाई ...(व्यवधान)...

श्री अहमद पटेल: वह सही नहीं है। उनको कैसे पता चला कि किसने किसको वोट दिया?

श्री विजय कुमार रूपाणी: आमोध में बीजेपी जीत गयी।

श्री अहमद पटेल: उनको कैसे पता है कि कौन किसको वोट दे रहा है? ये कह रहे हैं ... (व्यवधान)... इतने परसेंट अकलियत ने वोट दिया है, वे कैसे जान सकते हैं कि किसने किसको वोट दिया है? How can he say that?

श्री विजय कुमार रूपाणी: सर, मैं एक बात कहना चाहता हूं कि जब बड़ौदा की घटना हुई ...(व्यवधान)...

श्री राजीव शुक्ल (महाराष्ट्र): आप दंगे पर बोलिए न। वोट पर क्यों बोल रहे हैं? ...(व्यवधान)...

श्री विजय कुमार रूपाणी: बड़ौदा में घटना हुई ...(व्यवधान)... आप पीछे से न ...(व्यवधान)...

श्री सुरेन्द्र लाठ: क्या बात कर रहे हो?...(व्यवधान)...

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: वे अकेले बोलने वाले काफी नहीं है क्या, इतने सारे खड़े हो जाते हो?

श्री विजय कुमार रूपाणी: माननीय उपसभापति महोदय, जब बड़ौदा में घटना घटी, तब

हमारे राज्य के गृह मंत्री अमितभाई शाह तुरन्त ही बड़ौदा पहुंच गए थे। हमारे प्रभारी सचिव यानी एडिशनल चीफ सेक्रेटरी भी गांधी नगर से बड़ौदा पहुंच गए थे। वहां सब लोगों को इकट्ठा करके परिस्थिति का पूरा निरीक्षण करके लॉ एंड ऑर्डर की सिचुएशन पर कंट्रोल किया था और तीन तारीख को हमारे मुख्य मंत्री भी बड़ौदा गए थे। बीच में ही डोडा की घटना हुई और डोडा की घटना के समय, मैं अफसोस के साथ कहना चाहता हूं कि आप बात कर रहे हैं लेकिन हमारे केन्द्रीय गृह मंत्री डोडा नहीं गए थे, वह दुख की बात है।

श्री उपसभापति: कल तो क्लैरीफाई कर दिया है। उन्होंने क्लैरीफाई कर दिया है। ...(**व्यवधान**)...

श्री विजय कुमार रूपाणी: मैं गृह मंत्री जी की बात कर रहा हूं ...(**व्यवधान**)... दूसरा मैं, यह कहना चाहता हूं कि हमारे गृह मंत्री गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री श्रीप्रकाश जायसवाल जी के साथ संपर्क बनाए हुए थे और पूरी बड़ौदा की स्थिति की जानकारी दे रहे थे। उस वक्त जायसवाल जी ने भी एक स्टेटमेंट दिया है। इंडियन एक्सप्रेस में उन्होंने बताया है, उसे मैं यहां बताना चाहता हूं कि "गुजरात राज्य के गृह मंत्री और केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री श्रीप्रकाश जायसवाल तथा मीडिया को भी राज्यव्यापी अतिक्रमण दूर करने के अभियान की जानकारी दी थी। घटना, परिस्थितियों और विवादित धर्मस्थल पर खुले मन से बातचीत की थी और प्रशासन के सभी प्रयासों की जानकारी भी दी थी और जायसवाल जी ने गत सात मई को इंडियन एक्सप्रेस में प्रकाशित राजीव भट्टाचार्य से मुलाकात में कहा है कि अतिक्रमण हटाने की घटना तथा आगामी चुनाव के सीधा संबंध की बात विश्वास के साथ नहीं की जा सकती। उन्होंने कहा कि आरंभ में जो संघर्ष हुआ, वह अतिक्रमण हटाने वाला और विरोधियों के बीच था और दूसरे दिन इसने साम्प्रदायिक रंग लिया। उन्होंने स्वीकार किया कि प्रशासन ने स्थिति को नियंत्रण में लेने के लिए जरूरी कदम उठाए हैं और राज्य सरकार ने तुरन्त ही केन्द्रीय अर्ध-सैनिक बलों और सेना की भी मदद प्राप्त करने की कार्यवाही की है। गृह राज्य मंत्री, श्री जायसवाल जी का यह स्टेटमेंट इंडियन एक्सप्रैस में आया है। यानी सरकार ने तुरन्त कार्यवाही की है। इसके आधार पर मैं आपको कुछ आंकड़े भी देता हूं कि जब यह घटना घटी, तभी 1,017 लोगों को गिरफ्तार किया गया, जिनमें 756 लोग हिंदू थे, 263 लोग मुसलमान थे। कुल 1,017 लोगों को गिरफ्तार किया गया, CRP की 10 कंपनियां वहां तैनात थीं, पैरा मिलिट्री की 3 कंपनियां थीं, RAF की 8 कंपनियां थी, आर्मी की 6 कंपनियां थीं, वहां के External Magistrate 63 थे। पूरे दो दिनों में इस दंगे पर हमने कंट्रोल कर लिया था और वहां पर सरकार ने situation को अच्छी तरह से कंट्रोल किया।

उपसभापति महोदय, दूसरी बात यह है कि हमारे साथी अभी गुजरात की बात कर रहे थे कि गुजरात आज एक आंधी बन गया है, पूरी दुनिया में आज गुजरात की चर्चा चल रही है,

इसलिए चर्चा चल रही है क्योंकि गुजरात आज डेवलपमेंट में पहले नंबर पर है...(व्यवधान)... यहां से इतना निर्यात हो रहा है कि गुजरात में बड़ी-बड़ी इंडस्ट्रीज लग रही हैं। मैं दावे के साथ कहता हूं कि ऊर्जा के क्षेत्र में गुजरात ने बहुत काम किया है। आज गुजरात में 18,000 rural areas हैं। ज्योर्तिमय योजना के अंतर्गत गुजरात के सभी गांवों में without interruption 3 फेज लाइट 24 घंटे रहती है। गुजरात में पानी की समस्या थी ...(व्यवधान)... लेकिन सुजलाम सुफलाम योजना के अंतर्गत एक लाख चैक डैम गुजरात सरकार ने बनाए हैं। गुजरात में नर्मदा का पानी हमने कच्छ तक पहुंचा दिया है...(व्यवधान)... गुजरात में पानी की समस्या थी, मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि गुजरात में पीने के पानी की दुकान अब भूतकाल की बात हो गई है। गुजरात सरकार ने ई-ग्राम से लेकर आज Info-City बनाया है और जब हम Global India की ओर जा रहे हैं, गुजरात आज latest technology की ओर अग्रसर है।

उपसभापति जी, गुजरात के अधिकारियों और कर्मचारियों की ठीक तरह से काम करने के लिए कर्मयोगी योजना चलाकर गुजरात सरकार ने एक नया दृष्टांत रखा हैं। मैं आज दावे के साथ कहता हूं कि आंधी उठी है, लेकिन वह गुजरात के विकास की आंधी उठी है और सारे देश में और दुनिया में गुजरात के विकास की चर्चा हुई है।

उपसभापति जी, दंगा तो होता है, अलग-अलग स्टेट्स में होता है...(व्यवधान)... लेकिन कश्मीर में इतना दंगा हुआ और डोडा में...(व्यवधान)...

श्री रुद्रनारायण पाणि: माननीय सदस्य अपने स्थान पर नहीं हैं...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: पाणि जी, आप अपने स्थान पर बैठिए...(व्यवधान)... वह रिकॉर्ड पर नहीं जा रहा है...(व्यवधान)...

श्री विजय कुमार रूपाणी: माननीय उपसभापति जी, मैं बता रहा था कि अपना देश - अलग-अलग भाषा, अलग-अलग वेष, अपना देश बहुत बड़ा है, लेकिन इन दंगों को जो पोलिटिकल रूप दिया जा रहा है, वह ठीक बात नहीं है। जो कश्मीर में हुआ, कल हमने चर्चा की, यहां 1984 में सिखों का कत्ले-आम हुआ था, तो जब आप गोधरा को याद कर रहे हैं, तो वह बात क्यों नहीं याद कर रहे हैं? ये जो भी घटनाएं हुई हैं, ये दुर्भाग्यपूर्ण हैं। हम यह मानते हैं कि कोई भी विकास की बात हो, अतिक्रमण को हटाने की बात हो, सरकार इसके लिए ठोस तरीके का कदम उठाए और उसमें सब लोगों को मिलकर काम करना चाहिए...(व्यवधान)... माननीय मंत्री श्री ...(व्यवधान)...आप मंत्री बनें, ऐसा मैं कह रहा हूं ...(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज (उत्तरांचल): उपसभापति से आपको मंत्री बना रहे हैं।

श्री उपसभापति: मुझे यहां से निकालना चाहते हैं।

5.00 P.M.

श्री विजय कुमार रूपाणी: उपसभापति जी, मैं इस बात की ओर सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि गुजरात सरकार ने आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई शुरू की है। गुजरात में आतंकवाद का सफाया करने के लिए हमने पोटा का कानून बनाया था, लेकिन पोटा का कानून केन्द्र सरकार ने निकाल दिया। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि इसे क्यों निकाला। बाद में, महाराष्ट्र में जैसा कानून है, वैसा ही हमने गुजको कानून बनाया है, तो उसे भी केन्द्र सरकार मंजूरी नहीं दे रही है। यह बात भी ठीक नहीं है। गुजरात सरकार जो अपनी क्षमता से काम कर रही है, तो आप तुरन्त ही जो हमारा गुजको कानून है, उसको तुरन्त ही मंजूरी दे दें। मैं माननीय गृह मंत्री से अनुरोध करता हूं कि गुजरात में जो कुछ हो रहा है, उसमें आप हमें भी सहायता दीजिए और गुजको कानून को आप तुरन्त ही मंजूरी देकर गुजरात में हमारा हाथ मजबूत कीजिए। ऐसा मैं कहता हूं। धन्यवाद। आभार।

श्री अहमद पटेल: उपसभापति महोदय, चूंकि वे मेडन स्पीच कर रहे थे, मैं इंटेरप्ट नहीं करना चाह रहा था। सवाल यह नहीं है कि यहां पर मैं या मेरी पार्टी के कोई सदस्य या गुजरात में कोई इसके खिलाफ है कि अतिक्रमण को हटाया नहीं जाए। अतिक्रमण को बिल्कुल हटाया जाए, लेकिन जो structure 100 साल पुराना है, 150 साल पुराना है, 200 साल पुराना है, चाहे वह मन्दिर हो, मस्जिद हो, दरगाह हो, अगर उसको हटाया जाए, तो यह सिर्फ वड़ोदरा तक सीमित नहीं रहेगा, गुजरात तक सीमित नहीं रहेगा, आगे चल कर बाकी जगह पर क्या होगा, इसके बारे में भी सदन को गम्भीरता से सोचना चाहिए।

श्री उपसभापति: श्री सीताराम येचुरी।

श्री सीताराम येचुरी (पश्चिम बंगाल): उपसभापति महोदय, आज जो यह चर्चा हो रही है, यह एक बहुत ही गम्भीर सवाल पर हो रही है। मैं यह नहीं चाहता कि आप इसे इस तू-तू मैं-मैं के स्तर पर उतार ले आएं। क्योंकि सवाल यहां पर यह है कि जिसके बारे में यहां पर हमारी तरफ से चर्चा उठाने की कोशिश की जा रही है, वह यही है कि देश के अन्दर हम साम्प्रदायिक सद्भाव किस तरीके से बरकरार रख पाएंगे और एक जनतंत्र का गणतंत्र, एक धर्म-निरपेक्ष जनतंत्र का गणतंत्र जो हमारा भारत है, संवैधानिक रूप से, उसके स्वास्थ्य को किस तरीके से हम और मजबूत कर पाएंगे, सवाल यह है। जो वड़ोदरा में हुआ, उसके पीछे एक पृष्ठभूमि भी है कि गुजरात के अन्दर 2002 में पूरे देश का जो अनुभव रहा है और यहां पर सभी माननीय लोग, आप सभी लोग भी, कोई भी उसके पक्ष में आज तक उठ कर नहीं बोले कि वह सही हुआ। सवाल यह है कि वह गलत हुआ, यह सभी लोग मानते हैं कि गलत हुआ। यह अलग बात है कि इसके लिए कौन दोषी है, वह हमारी राय है, आपकी हो सकती है, लेकिन गलत हुआ। अगर गलत हुआ,

तो दोबारा वहां पर उस तरीके का वातावरण पैदा होना एक खतरनाक संकेत है, जिससे हम सबको सतर्क रहने की जरूरत है। अगर सतर्क रहने की जरूरत है, तो वहां पर मैं यह चाहता हूं कि पूरी राज्य सभा, यह सदन इसके बारे में गम्भीरता से चर्चा करे कि आखिर इस तरीके की घटनाएं हुई क्यों? सर, मैं जिस पृष्ठभूमि की बात कह रहा हूं, वह पृष्ठभूमि क्या है? आपके गुजरात के अन्दर आज भी सुप्रीम कोर्ट के सामने कई सारे केसेज हैं, जहां पर कहते हैं कि उसके बारे में दोबारा investigation हो। आज भी सीबीआई को कहा जा रहा है कि दोबारा कई सारे केसेज को re-open करके investigation हो। पहली बार शायद, हो सकता है, पहले हुआ हो, लेकिन पहली बार शायद आपके उस इलाके से, न्यायालय से अलग हटा कर, बाहर केसेज के बारे में चर्चा हो रही है और इसके बारे में तय हुआ है और इसके बारे में जजमेंट्स आए। शायद पहली बार यह भी हमारा अनुभव रहा कि जो दोषी रहे, उनकी जजमेंट्स के ऊपर जो आरोप-प्रत्यारोप लगे और जाहिरा केस के बारे में पहली बार perjury का भी जो केस लगा, वह riot victims के बारे में लगा है। आज भी हजारों लोग, जो वहां पर दंगों के शिकार थे, उनको न्याय नहीं मिल रहा है, यह शिकायत है। आज भी पोटा के सवाल पर पोटा रिव्यू कमेटी कहती है, गृह मंत्री यहां पर मौजूद हैं, हम चाहते हैं कि उनसे हमें यह जवाब मिले कि पोटा रिव्यू कमेटी कहती है कि वहां पर जितने लोगों को पोटा के अन्दर आपने गिरफ्तार किया है, वह जायज नहीं है, वह नाजायज है। रिव्यू कमेटी जब रिपोर्ट देती है, गुजरात के हाई कोर्ट ने और सुप्रीम कोर्ट ने, दोनों ने यह जजमेंट दिया है कि रिव्यू कमेटी का जो निर्णय है, उसको पब्लिक प्रोसिक्यूटर को मानना पड़ेगा। आज तक वह बात नहीं हुई। यह जो बात आज तक नहीं हुई, यह पृष्ठभूमि है, जिसके अन्दर हम देख रहे हैं कि आज वड़ोदरा में जो हुआ है, उस पृष्ठभूमि के अन्दर आप देखेंगे कि जरूर यह खतरनाक संकेत है। आखिरकार सवाल यह नहीं है कि गुजरात के अन्दर आर्थिक विकास हो रहा है या नहीं, सवाल यह नहीं है कि वह आर्थिक विकास और ज्यादा तेजी से हो सकता है या नहीं, सवाल यह है कि हमारा देश, जो एक धर्म-निरपेक्ष जनतंत्र या गणतंत्र है, उसको हम हिफाजत से रख पाते हैं कि नहीं, यह सवाल है। उस सवाल को अगर आप ध्यान में रख कर देखें, जो घटना घटी, उसके बारे में आज कहा जा रहा है कि encroachment है, कई सारे illegal structures हैं, उनको हटाना है। वह तो ठीक है, एनक्रोचमेंट है तो हटाइए, लेकिन उपसभापति जी रिकॉर्ड पहली बार बताता है कि यह सैयद रशीउद्दीन चिश्ती साहब के नाम से दरगाह थी और यहां रोज जो कार्यक्रम होता था, उस की पूरी फंडिंग हिंदू भाई करते थे। महोदय, पहली बार इस का जिक्र 1912 में होता है। वर्ष 1912 में जो सर्वे किया जाता है उस में बड़ौदा के सियाजी राव महाराज के रिकॉर्ड में, वहां के म्युनिसिपल रिकॉर्ड में यह दरगाह आती है। वहां का उस का इतिहास बताता है कि यह 385 साल पुरानी दरगाह है। यह एक महाराज के हाथ से, उस के प्रशासन के हाथ से रिकॉर्ड होता है। अब आप कहते हैं कि उस समय सड़क थी नहीं, तो उल्टा यह कहा जा सकता है कि यह इतनी पुरानी इमारत है जहां लोग श्रद्धा के साथ जा रहे थे, सभी धर्मों के लोग जा रहे थे। तो अगर सड़क

बाद में बनी, तो वह सड़क उस के ऊपर एनक्रोचमेंट है। वह नहीं है एनक्रोचमेंट सड़क के ऊपर बल्कि सड़क उस के ऊपर एनक्रोचमेंट है।

अब ठीक है आप को विकास करना है, सभी को विकास करना है और सड़कें बनानी हैं। उपसभापति महोदय, हैदराबाद में जहां पर मेरा निजाम कॉलेज हुआ करता था, वहां नई बिल्डिंग बन रही थी, आप को याद होगा। अब ये बिल्डिंग बनाने वाले सभी जगह होते हैं और वह अपना छोटा मंदिर हर जगह कंस्ट्रक्शन शुरू करने से पहले बनाते हैं। वहां आज आप देखिए वह छोटा मंदिर, जो उस कम्पाउंड में था और जहां पर हम खेलते थे, आज चौरास्ता के बीच में एक बहुत बड़ा मंदिर है। यह आप सब लोग जानते हैं कि हैदराबाद में वहां एक बहुत बड़ा मंदिर है। यह बहुत बड़ा मंदिर बन गया जोकि रोड के बीच में है। लेकिन उस समस्या को बातचीत कर के सुलझाया गया। सभी लोगों ने बातचीत कर के कहा कि उस को छू नहीं सकते क्योंकि उस के पीछे एक परंपरा जुड़ी थी, एक इतिहास जुड़ा था। तो कहा गया कि इस को एनसर्किल कर के रोड को चौड़ा कीजिए। इस मंदिर को बचाने के लिए कॉलेज की जमीन ले ली गयी। इस तरह उस डिस्प्यूट को सॉल्व किया गया, लेकिन जब इस दरगाह की बात आई तो वहां चर्चा हो रही है कि इसी तरीके से वहां भी सॉल्यूशन क्यों नहीं निकाला जा सकता? यहां पर बड़ोदरा के कमिश्नर रिकॉर्ड पर है कि हम लोगों से डायलॉग कर रहे थे और एक सॉल्यूशन आ सकता है। मैं यहां पर उस विवाद में नहीं जाना चाहता हूं जोकि अहमद भाई और उन के बीच में चल रहा था कि मुसलमान गुजरात के अंदर कहां पर वोट डालेगा? लेकिन मैं यही कहना चाहूंगा कि खुद भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख नेता ज्ञानी कुरेशी जी ने बड़ोदरा में कहा, I am quoting from his quotations, "The demolition of this *durgah* is a very well-planned conspiracy. The Municipal Corporation authorities had promised us that it would not be demolished. We were working upon a compromise formula, but they backed out and simply razed it." यह मैं नहीं कह रहा हूं, यह भारतीय जनता पार्टी के नेता कह रहे हैं। तो मेरा यही कहना था और मैं हैदराबाद का उदाहरण इसलिए दे रहा था क्योंकि उस कॉलेज में मैं पढ़ चुका हूं। अगर वहां पर वह कम्प्रोमाइज हो सकता था, तो यहां आप ने उस कम्प्रोमाइज का इंतजार क्यों नहीं किया? वहां बातचीत हो रही थी, उस समय पुलिस के द्वारा इस तरीके की कार्यवाही करने से सांप्रदायिक दंगा भड़का। फिर जब दंगा भड़का तो उस के बाद क्या कार्यवाही होती है? उस के बाद कार्यवाही यह होती है कि पुलिस के आने के बाद वहां पर "शूट एट साइट" का ऑर्डर होता है। वहां लोगों की "ऑटोप्सी" की गयी है। वहां न पहले लाठी चार्ज, न वाटर कैनन होती है, कुछ नहीं – सीधे फायरिंग और फायरिंग होती है छाती पर।

महोदय, यहां आज भी सुप्रीम कोर्ट के अंदर वहां के आई॰जी॰ पांडे साहब के बारे में केस है जिन के बारे में मैं इस सदन में कह सकता हूं कि उन के ऑफिस में हम लोगों को पूरी एक रात

गुजारनी पड़ी। यहां पर अमर सिंह जी नहीं हैं, मेरे साथ वह भी थे और राज बब्बर व शबाना जी, जो उस समय सदन की सदस्य थीं, वह भी साथ थीं। हम सभी लोगों को 1 मार्च, 2002 को उन के दफ्तर में पूरी रात भर बैठना पड़ा क्योंकि हम न जान पाएं कि बाहर क्या हो रहा है। खैर, वह अलग सिलसिला है। उस के बारे में मैं नहीं जाना चाहता हूं, लेकिन जो बात मैं कहना चाहता हूं वह यह है कि उन को आप ने प्रमोशन देकर सी॰बी॰आई॰ का डायरेक्टर बनाया, उस के बाद आई॰जी॰ और दो हफ्ते बाद यह घटना होती है। यह उन की पृष्ठभूमि रही है। इसलिए मैं चाहता हूं कि सदन के अंदर हम इस बात को बहुत ही गंभीरता से लें और गंभीरता की बात यह है कि अगर 385 साल पुरानी इमारत और यह एक सूफी की दरगाह है, एक चिश्ती साहब की दरगाह है, उसी तरीके से जिस पृष्ठभूमि की बात कही गयी, 2002 में वली गुजराती की दरगाह को खत्म कर के वहां अहमदाबाद में सड़क बना दी गयी। कर्नाटक के चिकमंगलूर में बाबा बुदनगिरी के नाम की एक सूफी दरगाह है। आज वहाँ पर भी यही समस्या खड़ी की जा रही है कि यह किसके worship का मसला है। हम लोगों ने, पूरे सदन ने 1993 में एक प्लेसेज़ ऑफ वरशिप एक्ट अपनाया, जिसके अन्दर क्या कहा गया कि 1947 से पहले उसका जो भी स्टेटस रहेगा, उसको डिस्टर्ब नहीं करेंगे। सड़कें बनानी हैं, तो हमारे पास सभी जगह पर अनुभव है कि आप किस तरह से कंप्रोमाइज सोल्यूशन ला सकते हैं। तो सवाल यह है कि कंप्रोमाइज सोल्यूशन न ढूँढते हुए भी, जब वह सोल्यूशन आ रहा था, उसका इंतजार न करते हुए जिस जल्दबाजी में यह काम किया गया, वह इस पूरे साम्प्रदायिक दंगे भड़कने का और वहाँ के पूरे वातावरण के बिगड़ने का कारण था। हम इसी पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए चाहते हैं कि केन्द्र सरकार भी – यहाँ पर 65 ऐसे instances हैं, जहाँ पर वे कह रहे हैं कि सी॰बी॰आई॰ को पुनः वहाँ इन्वेस्टिगेट करने की जरूरत है। मैंने पोटा का उदाहरण दिया कि पोटा रिव्यू कमेटी ने जो राय दी, वह आज तक लागू नहीं हुई। जब यह लागू नहीं हुई और जब कानूनी तौर पर सुप्रीम कोर्ट और गुजरात के हाई कोर्ट ने खुद कहा कि स्टेट गवर्नमेंट को रिव्यू कमेटी की रिपोर्ट को इम्पिलमेंट करने के अलावा और कोई चारा नहीं है। अब केन्द्र भी ऐसी परिस्थिति में उसकी जवाबदेही सी॰बी॰आई॰ की तरफ से या पोटा की रिव्यू कमेटी की तरफ से बताए कि किस तरीके से ऐसी हालत बिगड़ सकती है। गुजरात गर्व के साथ अड़ गया। ...(व्यवधान)....

SHRI ARUN JAITLEY: Sir, since Mr. Yechury has mentioned it repeatedly that the POTA Review Committee's. ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: Only second time, not repeatedly. This is only second time that I have mentioned it.

SHRI ARUN JAITLEY: ...recommendations would be binding as far as State Government is concerned, the Police is concerned and the Prosecutor is concerned, could he please enlighten us as to which

judgement is this? Sir, why I am saying this is because to the best of my knowledge, it is on the satisfaction of the Prosecutor in regard to the withdrawal of a case, and then on the approval of the court to that satisfaction, that the case stands withdrawn. And, the Gujarat High Court has clearly said, -- the Supreme Court has not disagreed with it -- at best, it can be an advice to the Prosecutor; the judgement of the Prosecutor and the court prosecuting the case will eventually be final, and not an Executive Committee. ....*(Interruptions)*... Otherwise, what Mr. Yechury says, an Executive recommendation with regard to innocence or guilt will be binding on a judicial authority; nobody has said that. ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, my learned colleague is a lawyer and a lawyer must know the difference between Executive and a quasi-judicial body. What is a Review Committee for? And what are the terms of reference of this Review Committee, let the Home Minister please tell the House. And, the Review Committee here has said that these are the people who could be charged with the existing laws; there is no need of a POTA, Mr. Arun Jaitley. ...*(Interruptions)*... and, this is exactly what he said. ...*(Interruptions)*...

SHRI ARUN JAITELY: This is the judgement of the Gujarat High Court and the Supreme Court which has said that it is binding on the ...*(Interruptions)*...

श्री उपसभापति: अरूण जेटली जी, आप बात कर रहे हैं। उस वक्त यह प्वायंट ...(**व्यवधान**)...

SHRI SITARAM YECHURY: My esteemed colleague will please listen — but since I am not an erudite lawyer like he is, I don't know about it. I mean, I don't keep track as to which judgement is this. ...*(Interruptions)*...

SHRI ARUN JAITLEY: It is in Raja Bhaiya's case. The recommendation of the Committee was not binding. It was the final opinion of the court. ...*(Interruptions)*... The Prosecutor has to apply judgement independently.

SHRI SITARAM YECHURY: The Prosecutor has no other option but to take that opinion. The Court will have the right. But the Public Prosecutor under the Government of Gujarat has no other option. ...*(Interruptions)*... he has to go by the POTA Review Committee's recommendations, and that, Sir, is what is being obfuscated. ...*(Interruptions)*...

SHRI SHAHID SIDDIQUI: The Supreme Court has said that the Gujarat Prosecutors or even the Gujarat courts are biased. The Supreme Court has said it very clearly. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please allow Mr. Yechury to speak. ...*(Interruptions)*...

SHRI ARUN JAITLEY: In that case, they did not go by the advice of the ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Jaitley, please allow Mr. Yechury to speak.

SHRI SITARAM YECHURY: Thank you, Sir. What I am saying here very clearly is that this matter is now before the Supreme Court. The Supreme Court has taken up the matter on what the Gujarat High Court has ruled. The Supreme Court is seized of that matter. But the point that I am making here, and on which I think I am right is this. I think I am right in making this point; let the court decide. But the POTA Review Committee gives its decision and it has given an unambiguous decision that more than 90 odd per cent of these people who have been arrested under POTA in Gujarat could have been tried under existing laws, and in no way can they be treated as conspiring as a terrorist conspiracy against the State, and this is the unequivocal, unambiguous decision of the POTA Review Committee. The Public Prosecutor of any State has no other option but to accept that. He can go to the court, and the court if it so decides, it can put that aside. Yes, let the courts decide that. But, how can the public prosecutor. ...*(Interruptions)*...

श्री उपसभापति: आप बोलिए। ...(व्यवधान)... Let him finish, Mr. Jaitley ...*(Interruptions)*... Let him finish ...*(Interruptions)*... Mr. Jaitley, let him finish. ...*(Interruptions)*... नहीं, नहीं। आप बैठिए। ...(व्यवधान)... आप बैठिए। आप बैठिए, प्लीज। ...(व्यवधान)... आप बैठ जाइए।

SHRI ARUN JAITLEY: This is not a forum for people ...*(Interruptions)*... who commit atrocities ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Jaitley, when you are speaking you may make your point. ...*(Interruptions)*... If you want to make a point, you can say then ...*(Interruptions)*...

SHRI ARUN JAITELY: Your party has used ...*(Interruptions)*... photographs in the West Bengal elections. ...*(Interruptions)*... posters in Kerala...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Arun Jaitley, this is not done ...*(Interruptions)*... What is this? Why are you not allowing him to speak...*(Interruptions)*... This is not right ...*(Interruptions)*... What is this ...*(Interruptions)*... This is not right. Why are you not allowing him to speak? ...*(Interruptions)*... आप बैठिए। पाणि जी, आप बैठिए। ...(व्यवधान)... आप बैठिए। ...(व्यवधान)... आप बैठिए, प्लीज। आप बैठिए। ...(व्यवधान)... please...*(Interruptions)*...

SHRIMATI BRINDA KARAT: Sir, he has made an accusation against my party, which is totally incorrect. Sir, over 700 of my party activists have become martyrs in the fight against terrorism...*(Interruptions)*...

श्री उपसभापतिः देखिए,...(व्यवधान)... वर्मा जी, आप बैठिए। देखिए, कल कितनी अच्छी बहस हुई। कल यहां डोडा पर बहुत अच्छी बहस हुई थी।

SHRIMATI BRINDA KARAT: Sir, please expunge...*(Interruptions)*... Who is he talking about? ...*(Interruptions)*... He is talking about a party which is fighting...*(Interruptions)*...

श्री उपसभापतिः आप जब बोलना चाहें, ...(व्यवधान)... अरुण जेटली जी, आप अपनी बात रख रहे हैं...(व्यवधान)... You are going to speak. You may then say whatever you want to say. Why are you disturbing in between? ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI BRINDA KARAT: Sir, please expunge those comments...*(Interruptions)*... expunge the comments he has made...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I will look into his comments and then review...*(Interruptions)*... I will look into it.

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, this is precisely why I began speaking saying that this is an issue that requires a certain amount of attention and gravity of this House. I did not want matters to degenerate. I do not want certificates for my patriotism from* I had very clearly said ...(*Interruptions*)...

प्रो. राम देव भंडारीः सच्चाई कड़वी होती है। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापतिः आप यह क्या कर रहे हैं? ...(व्यवधान)... आप क्या कर रहे हैं? ...(व्यवधान)... नहीं, नहीं, प्लीज। देखिए, आप जाइए अपनी सीट पर। डिबेट होने दीजिए। ...(व्यवधान)... कहने दीजिए उनको अपनी बात। ...(व्यवधान)...

*Expunged as ordered by the Chair.

SHRI SITARAM YECHURY: I am not yielding ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: If he yields, then you can speak. But he has not yielded ...(*Interruptions*)...

SHRI ARUN JAITLEY: Sir, I am on a point of order. Whether the last statement, which Mr. Yechury has used, is going on record ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I shall examine it and let you know ...(*Interruptions*)...

SHRI SITARAM YECHURY: I am not yielding ...(*Interruptions*)...

SHRI ARUN JAITLEY: Sir, the remarks used must be expunged ...(*Interruptions*)... they cannot be used in parliamentary democracy ...(*Interruptions*)...

SHRI SITARAM YECHURY: Absolutely not ...(*Interruptions*)... I will not accept this ...(*Interruptions*)... I will not accept ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I will examine and take a decision. Please ...(*Interruptions*)... आप बैठ जाइए। ...(व्यवधान)...

SHRI SITARAM YECHURY: I am not yielding. ...(*Interruptions*)...

SHRI ARUN SHOURIE (Uttar Pradesh): I have a point of order. ...(*Interruptions*)... Yesterday, you gave a ruling ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He has a point of order. ...(*Interruptions*)...

वे प्वाइंट आफ आर्डर पर बोल रहे हैं। ...(व्यवधान)...

SHRI SITARAM YECHURY: I am not yielding ...(*Interruptions*)...

श्री शाहिद सिद्दिकी: लोकतंत्र में विश्वास नहीं है। ...(व्यवधान)... हाऊस को डिस्टर्ब करते हो। ...(व्यवधान)...

†شری شاہد صدیقی : لوک تنتر میں وشواس نہیں ہے.....مداخلت.....ہاؤس کو ڈسٹرب کرتے ہو.....مداخلت.....

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He is not yielding ...(*Interruptions*)...

SHRI ARUN SHOURIE: You gave a ruling ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let him complete. After that, you can say. ...(*Interruptions*)... I will listen to you ...(*Interruptions*)... आप बैठिए।

†Transliteration in Urdu Script.

SHRI ARUN SHOURIE: In your ruling, you said last time, 'Look at what Arun Jaitley has said.' Yesterday, you gave a ruling about that case. ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I said, I will examine it ...(*Interruptions*)...

SHRI ARUN JAITLEY: He has called a political party an* and you want to examine it ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He is claiming that he has been told something. ...(*Interruptions*)... I will examine it ...(*Interruptions*)...

श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे (महाराष्ट्र): यह जो गाली-गलौच कर रहे हैं, यह सहा नहीं जाएगा। ...(**व्यवधान**)... यह रिकार्ड में नहीं जाना चाहिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: वे भी कुछ बोल रहे हैं कि रिकार्ड में नहीं जाना चाहिए, आप भी कह रहे हैं कि रिकार्ड में नहीं जाना चाहिए, मैं देखूंगा कि रिकार्ड में क्या है। ...(**व्यवधान**)...

SHRI SITARAM YECHURY: He has called me a* ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I will look into the record ...(*Interruptions*)...

SHRI BALAVANT *ALIAS* BAL APTE: This has to be expunged ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I will look into the record ...(*Interruptions*)...

श्रीमती वृंदा कारत: ये जो मर्जी बोलें किसी को भी इस हाऊस में, हम लोग चुपचाप सह लेंगे, लेकिन हम लोग अगर ...(**व्यवधान**)...

एक माननीय सदस्य: महात्मा गांधी को भी* ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: यह भी ऑब्जक्शनेबल रिमार्क्स हैं। that will be looked into, and then I will remove it ...(*Interruptions*)...

श्री सीताराम येचुरी: अगर आप कहते हैं कि* तो सुनिए। ...(**व्यवधान**)...

Sir, I was responding and again I repeat that this issue requires to be discussed with a degree of gravity which is necessary for the sake of maintaining the secular democratic character of India. I was responding essentially when charges of protecting* were levelled against us. Therefore, what I am again appealing to you and through you to the

*Expunged as ordered by the Chair.

House is that is a matter of very grave importance for the future of our country and after the great debate, all that they have been shouting just now, we went through all that and then finally we, the people of India, adopted this Constitution, and the essential fundamental tenet and the feature of this Constitution on which the Supreme Court repeatedly endorsed and drew the attention of the entire country is its secular democratic character, and that is something that we can never compromise and we cannot compromise. Therefore, what happened and continues to happen in Gujarat

और वड़ोदरा में जो हुआ उस घटना के बाद, यह सिर्फ मामूली बात नहीं है। जैसा हम लोगों ने सुना है कि दंगे तो होते ही रहते हैं। सवाल यह है कि अगर दंगे होते ही रहते हैं, तो क्या होते ही रहने देंगे? अगर देश बर्बाद हो रहा है तो क्या होने देंगे? यह हमें मंजूर नहीं है, यह साफ सी बात है। ये दंगे नहीं होने चाहिए और उसके लिए कड़ी कार्रवाई करनी होगी। कोई भी प्रशासन हो ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: येचुरी जो बोल रहे हैं, इनको डिस्टर्ब मत करिए।

श्री सीताराम येचुरी: कोई भी प्रशासन हो, सर, हम यही चाहते हैं कि वहां पर अगर आधी रात में एक जिन्दा व्यक्ति को जला दिया जाता है, महोदय, अगर वहां पर कार्यवाही हुई तो गृहमंत्री जी यह बताएं कि किन-किन लोगों को पकड़ा गया? जैसा अभी यहां पर कहा भी गया कि जो लोग वहां पर थे, चाहे वे किसी भी राजनीतिक संस्था अथवा किसी अन्य संस्था के साथ क्यों न हों, जो खुलेआम वहां की पुलिस के साथ घूमते रहे हैं और उनके बारे में सभी जगह खबरें भी छपी हैं, लेकिन उनके बारे में क्या कार्यवाही हुई है? जो कुछ भी वहां पर हुआ, यह किसी एक प्रदेश की बात नहीं है। इस देश के अन्दर हम उन लोगों में सबसे आगे हैं, जो यह नहीं चाहते कि राज्यों के अधिकारों के ऊपर कोई भी हस्तक्षेप हो। लॉ एंड ऑर्डर स्टेट का सब्जेक्ट है और हम यह नहीं चाहते हैं कि वहां पर किसी भी प्रकार का कोई केन्द्रीय हस्तक्षेप हो, लेकिन जब हालात इतने बिगड़ जाते हैं कि अपने ही संविधान की बुनियाद को हम नहीं बचा पाते, ऐसी परिस्थिति में हम सभी को हस्तक्षेप करने की जरूरत है। इसलिए बड़ोदा की इस पूरी चर्चा में, बड़ोदा के अन्दर जो भी बातें हुई, हम कहते हैं कि यह सीधा-सीधा 1993 के कानून का उल्लंघन हुआ है। Places of Worship Act, 1993 को जो कानून पारित हुआ, उसका सीधा-सीधा उल्लंघन हुआ है। यह कोई एन्क्रोचमेंट का सवाल नहीं है। 385 वर्ष पुरानी एक सूफी दरगाह के ऊपर यह हमला हुआ है, वहां पर समझौते के लिए बात करते हुए उसी पार्टी के लोगों ने जो कहा, मैंने उसी को अभी पढ़कर सुनाया। समझौता हो रहा था, लेकिन उसे होने नहीं दिया गया और पुलिस ने इस तरह से वहां पर हस्तक्षेप किया। इसलिए यह एक गंभीर सवाल है ...(**व्यवधान**)...

श्री विनय कटियार (उत्तर प्रदेश) उपसभापति महोदय, इन्होंने यह जो नगर-निगम वाली बात पढ़ी है, जरा उसका रिकॉर्ड आप मंगवा लीजिए ...(**व्यवधान**)

श्री उपसभापति: देखिए वह बोल रहे हैं, वह रिकॉर्ड क्यों मंगवाएंगे ...(**व्यवधान**) रिकॉर्ड मंगाने के लिए मैं हूं ...(**व्यवधान**) आप बैठिए ...(**व्यवधान**) देखिए, यह बात ठीक नहीं है ...(**व्यवधान**) आप बैठिए ...(**व्यवधान**)

श्री विनय कटियार: सर, ऐसा नहीं है ...(**व्यवधान**) नहीं, नहीं ऐसा नहीं है, मैं तो उनकी सहायता करना चाहता हूं ...(**व्यवधान**) मैं तो रिकार्ड की बात कर रहा हूं ...(**व्यवधान**)

श्री उपसभापति: कटियार जी, येचुरी जी बाल रहे हैं ...(**व्यवधान**) आप जैसा चाहेंगे क्या वह वैसा बोलेंगे ...(**व्यवधान**)

श्री विजय कटियार: सर, जो बात वह कहना चाहते हैं, जरा वह रिकॉर्ड मंगवा लीजिए ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: यह बात ठीक नहीं है।

कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सुरेश पचौरी): उपसभापति महोदय, माननीय सदस्य का नाम उनकी पार्टी ने दे दिया है। अच्छा यही होगा कि यह डिबेट जिस संजीदगी से और जिस बिषय पर चल रही है, उसकी गंभीरता को दृष्टिगत रखते हुए, हम सभी सदस्यों को ध्यान से सुनें। उनकी पार्टी ने माननीय सदस्य का नाम भी दिया है, जब उनका अवसर आए, तब वह बोल सकते हैं।

श्री उपसभापति: मैं भी सभी मैम्बर्स से बार-बार यही अपील कर रहा हूं कि आप ...(**व्यवधान**)... नहीं, नहीं, ...(**व्यवधान**)... देखिए कटियार जी, आप लोक सभा मैम्बर भी रह चुके हैं और अब राज्य सभा के मैम्बर हैं, आप यह कौन सी परम्परा डाल रहे हैं ...(**व्यवधान**)... यह आप कौन सी परम्परा डाल रहे हैं कि बीच-बीच में उनसे पूछ रहे हैं कि रिकार्ड मंगवाइए और साथ ही चेयर को बोल रहे हैं कि वह रिकार्ड मंगवाए। यह सही बात नहीं है, प्लीज़ आप बैठ जाइए।

श्री सुरेश पचौरी: बीच में आप टोक-टाक क्यों कर रहे हैं ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: जब आप बोलेंगे, तब पूछ लीजिएगा...(**व्यवधान**)...

श्री विनय कटियार: ठीक है, अब आपकी रूलिंग आ गई हैं, बहुत अच्छा है। हम भी अब बोलने वाले हैं।

श्री सीताराम येचुरी: मैं आपसे निवेदन कर रहा था कि आप 1912 का रिकॉर्ड मंगवा लीजिए। बड़ोदा के एक श्री सियाजी महाराज हुए हैं, उन्होंने उस समय बड़ोदा का सर्वे करवाया

और उनके रिकॉर्ड्स के अन्दर इस दरगाह का उल्लेख हैं उन्होंने जो तिथि दी है, उन्हीं के द्वारा दिए गए तथ्यों के चलते मैं यह बता रहा हूं। तभी से इस दरगाह के ऊपर सभी धर्मों के लोग जाते रहें हैं। इसके बारे में जो तारीख़ उन्होंने दी है, उसी से गिनती करके ही मैंने यह 385 वर्ष का फिगर दिया है। यह 386 भी हो सकता है और 84 भी हो सकता है, लेकिन सवाल यह है कि क्या स्पष्ट रूप से यह रिकॉर्ड पर है? बाबा बुदरगिरि, जो चिकमगलूर में हैं, वह रिकॉर्ड पर है? वहां पर आज भी सभी धर्मों के लोग जाते रहते हैं, वह भी आज विवाद में है।

श्री विनय कटियार: जिस तरह की आप बातचीत कर रहे हैं, उस तरह की बातचीत ...(व्यवधान)...

SHRI SHAHID SIDDIQUI: Sir, he is interrupting in every sentence.

श्री उपसभापति: देखिए कटियार जी, वह कह सकते हैं...**(व्यवधान)**... वह कह सकते हैं ...(व्यवधान)...

श्री सीताराम येचुरी: सर, मैं सदन से यही आग्रह कर रहा हूं, जितनी भी घटनाएं अभी तक हुई हैं, जिनकी अभी तक मैंने चर्चा की है, उन्हें मैं फिर से हराना नहीं चाहता हूं। सवाल यह है कि जो कुछ भी हुआ है, गुजरात का जो पिछले पांच-छः सालों का इतिहास रहा है, उसे उसके साथ जोड़ते हुए देखें तो वह हमारे भारत पर, जो धर्मनिरपेक्ष जनतांत्रिक गणतन्त्र है, उस पर एक कलंक है। उसे हम स्वीकार नहीं कर सकते और अगर दोबारा उसे दोहराने की परिस्थिति आई, तो उसके बारे में हमें न सिर्फ सतर्क करना होगा बल्कि उसे रोकना भी होगा। मेरा यही निवेदन है कि हमारे देश का जो कानून है, 1993 में जो Places of Worship Act पास हुआ, उसका उल्लंघन न हो और उन लोगों पर कार्यवाही हो, जिन लोगों ने इस दुर्घटना की शुरुआत करवाई। आज भी खबरें यह हैं कि जो लोग वहां पर मुख्य आरोपी हैं, उनके ऊपर कार्रवाई नहीं हो रही है और यह हमारे पहले वाले अनुभव को ध्यान में रखते हुए गुजरात पुलिस के बारे में जो सुप्रीम कोर्ट ने कहा यह सब कुछ ध्यान में रखते हुए हमें कदम लेने की जरूरत है। वहां पर हम चाहते हैं कि गृह मंत्रालय और गृह मंत्री ही सतर्कता से इसके अंदर रहें ताकि इस तरह का माहौल इस देश के अंदर न बिगड़े और इस महान भारत और इस धर्मनिरपेक्ष जनतंत्र की गणतंत्र को हम मजबूती से आगे ले जाएं, यही सिर्फ हमारा निवेदन है।

श्री उपसभापति: श्री अबू आसिम आज़मी। आपकी पार्टी के 8 मिनट हैं। टाइमिंग का ध्यान रखें।

श्री अबू आसिम आज़मी (उत्तर प्रदेश): थैंक्यू सर, आपने मुझे बड़ोदरा और पूरे मुल्क में जो फिरकापरस्ती है, उस पर बोलने का मौका दिया।

श्री उपसभापति: आप कल जैसा ही डिबेट रखें।

श्री अबू आसिम आज़मी: मैं हमेशा वैसा ही रखता हूं। सबसे पहले तो मैं यह ही कहूंगा कि जहां दंगा होता है वहां इंसान ही मारा जाता है। हमने कल और आज भी डोडा में जो लोग मारे गए हैं उस पर फिर अफसोस जाहिर करते हैं और अपनी बहुत बड़ी हमदर्दी उस पर जाहिर करते है। हमारे देश में जो कुछ भी हो रहा है मैं देख रहा हूं कि कुर्सी पर बने रहने के लिए बहुत से लोग यह काम कर रहें हैं। आज अगर डोडा में हुआ, तो, सर, आतंकवादी गतिविधियों ने किया। आतंकवादी गतिविधियां इस देश में बढ़ती जा रही हैं और हम सब मिलकर के उन लोगों के खिलाफ जिन पर हमारा कोई जोर नहीं चलता, जो इस देश में आतंक फैलाना चाहते हैं, उनके खिलाफ हम सब मिल करके बात कर रहे हैं, परन्तु इसी देश में रह करके इस सरकार में बैठे हुए लोग और पुलिस के जरिए अगर कुछ हो रहा है, तो क्या हम सब मिल कर के उसको नहीं रोक सकते? हम उसे रोकने की बात करते हैं, जिस पर हमारा कोई जोर नहीं है। लेकिन जो हमारे साथ में है जिसे हम रोक सकते हैं, मैं कहूंगा सेंट्रल की सरकार से कि इसको रोकने की आज सबसे ज्यादा जरूरत है। सर, मैं वहां गया था, मैं खुद चलकर बड़ोदरा गया था और वहां सारे हालात लोगों से पूछे हैं, लोगों से मिला हूं और मैं खुद रोकर आया हूं। यकीन मानिए यहां हिन्दू और मुसलमान का सवाल नहीं है, वड़ोदरा में जो कुछ हुआ है वह हिन्दू और मुसलमान के बीच में कुछ हुआ ही नहीं है। जो कुछ हुआ है यह पुलिस की तरफ से, सरकार की तरफ से कह करके पुलिस की तरफ से एकतरफा कार्रवाई हुई है। मैंने जाकर अस्पताल में देखा और वहां लोगों से मिला, 18-20 लोग अस्पताल में पड़े हुए थे। लोगों को जो गोलियां लगी थी किसी को नीचे गोली नहीं लगी थी, सबको ऊपर गोली लगी थी। एक आदमी को तो गले में गोली लगी, निकल गई और बेचारा बच गया। 18-19 लोग वहां पड़े हुए हैं और उसके बाद उनको वहां दवाई भी नहीं मिल रही हैं। वहां बताया कि एक्सरे कराना है लेकिन वहां एक्सरे मशीन ही नहीं है। जो सोशल आर्गनाइजेशन है वह बेचारे उनके गाड़ी के अंदर एक्सरे करवा रहे हैं। वहां एम॰ आर॰ आई॰ तो हो ही नहीं रही है और कहा जा रहा है कि दवाएं आप बाहर से लेकर आओ। यह बड़े अफसोस की बात है कि वहां पर किसी को एक रुपया भी कम्पंसेशन नहीं दिया गया। जो 2002 में कम्पंसेशन दिया गया उसके बारे में भी अच्छी तरह से मालूम है कि लोगों को बॉन्ड दे दिया गया तथा बाद में कहा गया कि वेट करो, वेट करो और अब कहा जा रहा है कि यह बॉन्ड कैश ही नहीं होगा। तो दस-पंद्रह हजार, बीस हजार किसी को कम्पंसेशन दिया गया। तो यह जो हो रहा है बहुत गलत हो रहा है सर, मैं कहना चाहता हूं कि यह तो हमारा देश है हमारे देश में लोग मजहबी अकाइद पर चलने वाले हैं लेकिन आज लोग भूखे रहने को तैयार हैं लेकिन अपने मजहबी अकाइद को कोई छोड़ने को तैयार नहीं है। डवलपमेंट करना है, डवलपेंट जरूर किया जाए, जब सारी बात सामने आ चुकी हैं, मैं वहां जाकर पर्सनल लोगों से मिलकर बात भी कर चुका हूं, सारे पूरे के पूरे डेलिगेशन को बुलाकर

उनसे बात की जा रही है और लोग कह रहे हैं कि अगर ये लोग जिद्द पर बज़िद हैं तो हम इसे खुद अपने हाथ से हटाएंगे, यहां पर रास्ता बनाएंगे। यह आज की दरगाह नहीं है, 385 साल की कह दी गई है, 385 साल में यहां कौन सा डवलपमेंट, कौन सा नक्शा बना हुआ था। लेकिन यह जानबूझ करके कुछ लोग यह समझते हैं कि 2002 में दंगा किया और सरकार की साख गिर रही थी, तो 2002 में दंगा किया तो उसके बाद फिर चुन कर आ गए। तो ये समझते हैं कि अब गिनती हुई साख को बचाने के लिए ऐसे ही दंगा करो और सत्ता में आकर बैठो। यह हमारे देश के लिए बहुत ही अफसोस की बात है। मैं तो कहता हूं कि अगर आत्मा होती होगी तथा गांधी जी की आत्मा होगी, उनकी आत्मा खून के आंसू रोती होगी कि मैंने जिस मुल्क को आजाद कराया और गुजरात में सबसे ज्यादा खतरनाक वाक्या हो रहा है तो गुजरात में जो खूनरेजी का खेल हो रहा है, तो गांधी जी की आत्मा कभी इन लोगों को माफ नहीं करेगी। यह जो हो रहा है आज। इसमें कौन लोग मारे जाते हैं? इसमें बेचारे वे लोग मारे जाते हैं जो रोजाना सुबह से शाम तक हाथ गाड़ी खींच करके, रिक्शा खींच करके, बेचारे पान की दुकान पर पचास-सौ रुपया कमा करके, मजदूरी करके, दूध का ठेला खींच करके अपना गुजारा करते है। और यही सारे लोग मारे गए हैं, कोई बड़ा आदमी इसमें नहीं मारा गया। बड़े आदमी अपने घरों में बैठकर के मरवा रहे हैं लोगों को और गरीब बेचारा मारा जा रहा है। यह हो रहा है इस देश के अंदर। सर, मैं यह कहना चाहता हूं कि एक बेचारा आदमी जिसकी मंगनी हुई थी, एंगेजमेंट हुई थी रात को, वह अपने भाइयों के साथ, सबके साथ बैठा हुआ था रात में, पुलिस आई, उसका नाम पूछकर पकड़ कर ले गई और 5 मिनट के बाद पता चला कि वहां उसकी लाश पड़ी हुई है। कोई पूछने वाला नहीं है। बीस आदमी गवाह बैठे हुए हैं कि उनके बीच से पुलिस उसको लेकर गई थीं एक आदमी बेचारा गाड़ी में आ रहा है, उसकी गाड़ी को टकरा दिया गया, फुटपाथ पर चढ़ गई और उसकी गाड़ी में घुसकर के उसको चाकू से मार दिया गया और बाद में गाड़ी जला दी गई और फायर बिग्रेड की गाड़ी आ रही थी, उसको रोक दिया गया, एम्बुलेंस को नहीं आने दिया गया, पुलिस वहां पर नहीं आई, यह वहां पर हो रहा है। अगर ऐसा इस देश में होगा, तो मैं यह कहता हूं कि गुलामी से भी बुरा यह देश हो जायेगा। इसलिए हम आपसे कहना चाहते हैं कि आज लोग भूखे रहने के लिए तैयार हैं, लेकिन अपने अकायद को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। मैं मुम्बई में देख रहा हूं, आप मुम्बई में मुम्बई अस्पताल के पास जाकर के देखिये, बहुत बड़ी मस्जिद बीच में बनी हुई है, सड़क का रुख मोड़ दिया गया है, आप मुम्बई में जाकर देखिये, एक बहुत बड़ा मंदिर बना हुआ है, वहां से सड़क मोड़ दी गई है, सड़कों के रुख और रेल पटरियों के रुख इबादतगाहों की वजह से मोड़ दिये गये हैं। आज अगर यह कहा जा रहा है कि डेवलपमेंट की वजह से इबादतगाहें तोड़ दी जायेंगी, तो इस मुल्क में लोग मानने के लिए तैयार नहीं हैं। हमारे भाई साहब बोल रहे थे कि मंदिर तोड़ दिये गये हैं, पता नहीं कैसे मंदिर तोड़ दिये जाते हैं और आप बर्दाश्त करते हैं। मंदिर और मस्जिद टूट जाये, इसको बर्दाश्त करें, यह तो मुझे नहीं लगता कि किसी मजहब में ऐसा होगा। डेवलपमेंट जरूरी है, लेकिन मंदिर-मस्जिद और दरगाह का बचाना उससे ज्यादा जरूरी है। सर, इसलिए मैं आपसे कहना चाहता हूं कि माननीय सदस्य पोटा की बात कर रहे थे, 80 लोग ट्रेन में जले, रिपोर्ट नहीं

आई थी कि उन 80 लोगों को किसने जलाया? अब रिपोर्ट आई है कि ट्रेन अंदर से जलाई नहीं जा सकती, यह रिपोर्ट बार-बार आई है। लेकिन 80 लोगों के जलने के बाद 180 लोगों को पोटा में डाला गया और उसके बाद एक्शन का रिएक्शन हुआ तो ढाई हजार लोग जला दिये गये, लेकिन पोटा में कितने लोग गये, इसके बारे में होम मिनिस्टर साहब बतायेंगे। ...(**व्यवधान**)... एक भी आदमी पोटा में बंद नहीं हुआ, क्या यह इन्साफ है? और इनको पोटा कानून चाहिए। जब 80 लोग जलाये गये, तो 180 लोग पोटा में बंद किये गये और ढाई हजार लोग जलाये गये, तो एक भी पोटा में बंद नहीं हुआ। यह मुल्क का कानून है? यह डिसक्रिमिनेशन हो रहा है और मैं चेलैंज के साथ कह सकता हूं कि अगर ऐसे ही होगा और जब कोर्ट यह फैसला करेगी कि बेस्ट बेकरी का मुकदमा या बिलकिश बानो का मुकदमा गुजरात में नही चल सकता है, दूसरे स्टेट में ले जाओ, तो इस बात को याद रखिये कि आप कितनी ही बातें, मुझे यहां आये तीन साल हो गये हैं, चार से पांच बार इस देश में आतंकवादी गतिविधियां और देश की इंटरनल सेक्योरिटी के ऊपर बहस हो चुकी है, आप पचास बार बहस कर लीजिए, लेकिन आप आतंकवाद को रोक नहीं सकते हैं। क्योंकि जिन लोगों की मां-बहनों को नंगा करके नचाया जायेगा और उनके साथ बलात्कार किया जायेगा, वह कहीं न कहीं, किसी न किसी आतंकवाद के साथ जाकर, मिलकर इस मुल्क को तबाह और बर्बाद करने की साजिश करेंगे। इसलिए मैं आज बहुत दुख के साथ कहना चाहता हूं, मैं एक मुसलमान होने के नाते कहना चाहता हूं कि मैं सबसे पहले जो लोग डोडा में मारे गये हैं, उनके लिए अपना पूरा का पूरा दुख प्रकट करता हूं और गम प्रकट करता हूं। यह हिन्दू और मुसलमान की बात नहीं है, यह भारतवर्ष के रहने वालों की बात है, यह भारतवासियों की बात है, इसे रोकने की जरूरत है। मैं कहना चाहता हूं कि उन लोगों को सबसे पहले कम्पनसेशन दिया जाये, जो लोग उसमें मारे गये हैं। कम्पनसेशन उसी तरह का दिया जाये जिस तरह का कम्पनसेशन 1984 के दिल्ली के दंगों में मारे गये लोगों को दिया गया है। उनको कम से कम पांच लाख रुपये कम्पनसेशन मिलना चाहिए, जो लोग मरीज हैं, उनको 2 लाख रुपया दिया जाये, जिनकी दुकानें, जिनके रिक्शे, जिनकी कारें डैमेज कर दी गई हैं, उन्हें उनको बनवाने के लिए कम्पनसेशन मिलना चाहिए। वहां पर जो पुलिस वाले हैं, जिन्होंने गोलियां चलाई, उनको सस्पेंड करके उनके खिलाफ मुकदमा चलाया जाये, जब तक ऐसा कदम नहीं उठाया जायेगा तब तक पुलिस वालों के हौसले बढ़े रहेंगे और ये इस मुल्क में इसी तरह से करते रहेंगे। हमारी बहन कह रही थीं कि मदद कीजिए, आपकी सरकार है, आप कदम उठाइये और आर्टिकल 356 लागू कीजिए, इसको कब लागू करेंगे? मैं इन्हीं बातों के साथ अपनी बात खत्म करता हूं कि आज जो गुजरात में हो रहा है, वह नहीं होना चाहिए। गुजरात बहुत ही डेवलेप्ड और बहुत ही अच्छी जगह है, गुजरात के लोग बड़े मिलनसार हैं, लेकिन आज गुजरात में हिन्दू-मुसलमान नहीं लड़ रहे हैं, वहां पर पार्टियां लोगों को लड़वा रही हैं। इस पार्टी का काम यह हो गया है कि लड़ाई करो और सत्ता में आओ, इसलिए ये ऐसा कर रहे हैं। मैं कहता हूं कि इसको तुरंत खत्म करने के लिए सरकार को, सेंट्रल की सरकार को कठोर कदम उठाना पड़ेगा, ताकि दोबारा से ये ऐसी हिम्मत न करने पायें। बहुत-बहुत शुक्रिया।

آئی، اس کا نام پوچھ کر پکڑ کر لے گئی اور ۵ منٹ کے بعد پتہ چلا کہ وہاں اس کی لاش پڑی ہوئی ہے۔ کوئی پوچھنے والا نہیں ہے۔ بیس آدمی گواہ بیٹھے ہوئے ہیں کہ ان کے بیچ سے پولیس اس کو لیکر گئی تھی۔ ایک آدمی بیچارہ گاڑی میں آرہا ہے، اس کی گاڑی کو ٹکرا دیا گیا، فٹ پاتھ پر چڑھ گئی اور اس کی گاڑی میں گھس کر اس کو چاقو سے مار دیا گیا اور بعد میں گاڑی جلادی گئی اور فائر بریگیڈ کی گاڑی آرہی تھی، اس کو روک دیا گیا، ایمبولینس کو نہیں آنے دیا گیا، پولیس وہاں نہیں آئی، یہ وہاں پر ہو رہا ہے اگر ایسا اس دیش میں ہوگا، تو میں یہ کہتا ہوں کہ غلامی سے بھی برا یہ دیش ہو جائے گا۔ اس لئے ہم آپ سے کہنا چاہتے ہیں کہ آج لوگ بھوکے رہنے کے لئے تیار ہیں۔ میں ممبئی میں دیکھ رہا ہوں، آپ ممبئی میں ممبئی اسپتال کے پاس جا کر کے دیکھئے، بہت بڑی مسجد بیچ میں بنی ہوئی ہے، سڑک کا رخ موڑ دیا گیا ہے، آپ ممبئی میں جا کر دیکھئے، ایک بہت بڑا مندر بنا ہوا ہے، وہاں سے سڑک موڑ دی گئی ہے، سڑکوں کے رخ اور ریل پٹریوں کے رخ عبادت گاہوں کی وجہ سے موڑ دئے گئے ہیں۔ آج اگر یہ کہا جا رہا ہے کہ ڈیولپمنٹ کی وجہ سے عبادت گاہیں توڑ دی جائیں گی۔ تو اس ملک میں لوگ ماننے کے لئے تیار نہیں ہیں۔ ہمارے بھائی صاحب بول رہے تھے کہ مندر توڑ دئے گئے ہیں، پتہ نہیں کیسے مندر توڑ دئے جاتے ہیں اور آپ برداشت کرتے ہیں۔ مندر اور مسجد ٹوٹ جائے، اس کو برداشت کریں، یہ تو مجھے نہیں لگتا کہ کسی مذہب میں ایسا ہوگا۔ ڈیولپمنٹ ضروری ہے، لیکن مندر مسجد اور درگاہ بچانا اس سے زیادہ ضروری ہے۔

سر، اس لئے میں آپ سے کہنا چاہتا ہوں کہ مانئے سدستے پوٹا کی بات کر رہے تھے، ۸۰ لوگ ٹرین میں جلے، رپورٹ نہیں آئی تھی کہ ان ۸۰ لوگوں کو کس نے جلایا؟ اب رپورٹ آئی ہے کہ ٹرین اندر سے جلائی نہیں جا سکتی، یہ رپورٹ بار بار آئی ہے۔ لیکن ۸۰ لوگوں کے جلنے کے بعد ۱۸۰ لوگوں کو پوٹا میں ڈالا گیا اور اس کے بعد ایکشن کا ری ایکشن ہوا تو ڈھائی ہزار لوگ جلادئے گئے، لیکن پوٹا میں کتنے لوگ گئے، اس کے بارے میں ہوم منسٹر صاحب بتائیں گے.....مداخلت.....ایک بھی آدمی پوٹا میں بند نہیں ہوا، کیا یہ انصاف ہے؟ اور ان کو پوٹا قانون چاہیئے۔ جب ۸۰ لوگ جلائے گئے، تو ۱۸۰ لوگ پوٹا میں بند کئے گئے اور ڈھائی ہزار لوگ جلائے گئے، تو ایک بھی پوٹا میں بند نہیں ہوا۔ یہ ملک کا قانون ہے؟ یہ ڈسکریمینیشن ہو رہا ہے اور میں چیلنج

†Transliteration in Urdu Script.

کے ساتھ کہہ سکتا ہوں کہ اگر ایسے ہی ہوگا اور جب کورٹ یہ فیصلہ کریگی کہ بیسٹ بیکری مقدمہ یا بلقیس بانو کا مقدمہ گجرات میں نہیں چل سکتا ہے، دوسرے اسٹیٹ میں لے جاؤ، چار سے پانچ بار اس دیش میں آتنک وادی گتی ودھیوں اور دیش کی انٹرنل سیکورٹی کے اوپر بحث ہو چکی ہے، آپ پچاس بار بحث کر لیجئے، لیکن آپ آتنک واد کو روک نہیں سکتے ہیں۔ کیونکہ جن لوگوں کی مان بہنوں کو ننگا کر کے نچایا جائے گا اور ان کے ساتھ بلاتکار کیا جائے گا، وہ کہیں نہ کہیں، کسی نہ کسی آتنک واد کے ساتھ جا کر، ملکر اس ملک کو تباہ اور برباد کرنے کی سازش کریں گے۔ اس لئے میں آج بہت دکھ کے ساتھ کہنا چاہتا ہوں میں ایک مسلمان ہونے کے ناطے کہنا چاہتا ہوں کہ میں سب سے پہلے جو لوگ ڈوڈہ میں مارے گئے ہیں، ان کے لئے اپنا پورا کا دکھ پرکٹ کرتا ہوں اور غم پرکٹ کرتا ہوں۔ یہ ہندو اور مسلمان کی بات نہیں ہے، یہ بھارت ورش کے رہنے والوں کی بات ہے، یہ بھارت واسیوں کی بات ہے، اسے روکنے کی ضرورت ہے۔ میں کہنا چاہتا ہوں کہ ان لوگوں کو سب سے پہلے کمپنسیشن دیا جائے، جو لوگ اس میں مارے گئے ہیں۔ کمپنسیشن اسی طرح کا دیا جائے جس طرح کا کمپنسیشن ۱۹۸۴ کے دہلی کے دنگوں میں مارے گئے لوگوں کو دیا گیا ہے ان کو کم سے کم ۵ لاکھ روپے کا کمپنسیشن ملنا چاہئے، جو لوگ مریض ہیں ان کو دو لاکھ روپے دیا جائے جن کی دکانیں، جن کے رکشے، جن کی کاریں ڈیمیج کر دی گئی ہیں انہیں ان کو بنوانے کے لئے کمپنسیشن ملنا چاہئے۔ وہاں پر جو پولیس والے ہیں جنہوں نے گولیا چلائیں، ان کو سسپنڈ کر کے ان کے خلاف مقدمہ چلایا جائے جب تک ایسا قدم نہیں اٹھایا جائے گا تب تک پولیس والوں کے حوصلے بڑھے رہیں گے اور یہ اس ملک میں اسی طرح سے کرتے رہیں گے ہماری بہن کہہ رہی تھیں کہ مدد کیجئے آپ کی سرکار ہے، آپ قدم اٹھائیے اور آرٹیکل ۳۵۶ لاگو کیجئے، اس کو کب لاگو کریں گے؟ میں انہی باتوں کے ساتھ اپنی بات ختم کرتا ہوں کہ آج جو گجرات میں ہو رہا ہے وہ نہیں ہونا چاہئے گجرات بہت ہی ڈیولپ اور بہت ہی اچھی جگہ ہے۔ گجرات کے لوگ بہت ہی ملنسار ہیں۔ لیکن آج گجرات میں ہندو مسلمان نہیں لڑ رہے ہیں، وہاں پارٹیاں لوگوں کو لڑوا رہی ہیں۔ اس پارٹی کا کام یہ ہو گیا ہے کہ لڑائی کروا اور ستہ میں آؤ، اس لئے یہ ایسا کر رہے ہیں۔ میں کہتا ہوں کہ اس کو فوراً ختم کرنے کے لئے سرکار کو، سینٹرل کی سرکار کو کٹھور قدم اٹھانا پڑے گا، تاکہ دوبارہ سے یہ ایسی ہمت نہ کرے پائیں۔ بہت بہت شکریہ۔

†Transliteration in Urdu Script.

श्री उपसभापति: शुक्रिया, आपने वक्त का लिहाज़ रखा। प्रो॰ राम देव भंडारी।

प्रो॰ राम देव भंडारी: माननीय उपसभापति जी, बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर गंभीर चर्चा हो रही है। मैं बीजेपी के माननीय सदस्य की बात को सुन रहा था। जब वे अपनी बात कह रहे थे, उन्होंने गुजरात के दंगों के बारे में कहा और यह भी कहा कि गुजरात में दंगे होते रहे हैं। अगर किसी एक सरकार के कार्यकाल में दंगा हो जाये, तो दूसरी सरकार के दौरान दंगा हो जाये, तो यह इसका प्रमाण नहीं होता है कि दंगे होते रहे हैं। महोदय, सरकार किसी भी पार्टी की हो।

उसका काम जनता के साथ न्याय करना है, जनता को सुरक्षा देना है, उसे सभी धर्म, सम्प्रदाय के लोगों के साथ बिना पक्षपात के शासन चलाना है। हमारे देश का धर्मनिरपेक्ष चरित्र है. उसकी रक्षा करना सभी सरकारों का काम है। देश में साम्प्रदायिक सद्भाव हो, सभी धर्मों के लोग एक साथ मिल-जुलकर रहें, यह इस देश का चरित्र है। महोदय, जो कुछ बड़ौदा में हुआ ऐसा लगा कि गुजरात कहीं 2002 को फिर से दोहराने तो नहीं जा रहा है।

कई लोग मारे गए और बड़ी संख्या में लोग घायल भी हुए। बड़ौदा गुजरात की सांस्कृतिक राजधानी है। सरकार का काम है - जहां राज्य की संस्कृति हो या देश की संस्कृति हो, परम्परा हो, आस्था हो - उसकी रक्षा करना। महोदय, तीन सौ वर्षों से अधिक पुरानी दरगाह थी और उस दरगाह को तोड़ने से पहले सरकार को उसके बारे में सौ बार सोचना चाहिए था। कई धर्मों के लोग, न सिर्फ मुसलमान, बल्कि हिन्दू भी उस दरगाह पर जाते थे, दूसरे धर्मों के लोग भी उस दरगाह पर जाते थे। यह विभिन्न धर्मों की एक संस्कृति जैसी बनी थी, उसको तोड़ने से पहले सोचना चाहिए था। ऐसी बात नहीं है कि उससे पहले नगर निगम के महापौर के पास या उनके अधिकारियों के पास इस संबंध में चर्चा नहीं की गयी। वहां की महापौर भारतीय जनता पार्टी के नेता हैं, उनके पास लोग गए थे, जो अधिकारी हैं, उनके पास भी लोग गए थे मगर उन्होंने उनकी एक नहीं सुनी। लगा कि शायद उनके मन के किसी कोने में इस माध्यम से गुजरात-2002 को तो नहीं दोहराना चाहते थे? महोदय, जिंदा जलाने का शायद इनको शगल है, 2002 में भी कई लोगों को जिंदा जलाया गया था। इस बार भी रात को एक बजे जब एक रफीक नाम का व्यापारी अपनी गाड़ी से जा रहा था, उसको घेर करके उसी गाड़ी में उसे जिंदा जला दिया गया। महोदय, उसने कई बार पुलिस को फोन किया, मगर पुलिस उनकी सहायता नहीं कर सकी। महोदय, एक डीजीपी की बहाली इस बीच गुजरात में हुई है। उनके बारे में अखबारों में काफी खबरें छपी हैं। जब गुजरात में 2002 में दंगा हो रहा था, उस समय वे अहमदाबाद में पुलिस कमिश्नर थे। जैसे ही वे डीजीपी बने, बड़ौदा में दंगा हुआ। महोदय, इस प्रकार के लोगों को, जो बदनाम हैं, खास करके साम्प्रदायिक दंगे के लिए बदनाम हैं, ऐसे लोगों को पुलिस की सबसे ऊंची जगह पर बिठाने का क्या मायने हो सकता है? क्या चाहती है सरकार ऐसे लोगों से? जो मजदूर है, जो ठेला चलाता है, उसका भी नाम पूछकर गोली मार दी। पहले नाम पूछा कि तुम्हारा क्या नाम है। जब

उसने कहा कि महमूदिया शेख नाम है, तब उसके पैर में गोली मार दी। एक 24 बरस का मजदूर टोपी पहने हुए था, जुल्फीकार मिंया, टोपी देखकर उसको गाड़ी में बैठे-बैठे गोली मार दी। वहां की सरकार क्या चाहती है? महोदय, कोई भी दरगाह हो, मंदिर हो या मस्जिद हो और खास करके तीन-चार सौ साल पुरानी - यह हमारी आस्था, हमारी संस्कृति, हमारे इतिहास की प्रतीक होती है। पता नहीं इनको, हमारी आस्था, इतिहास और संस्कृति के जो प्रतीक हैं, उनको तोड़ने में क्यों बहुत आनन्द आता है? अयोध्या में तोड़ दिया। उनको तोड़ने में आनन्द आता है। ये कानून की बात करते हैं, कोर्ट की बात कर रहे थे। मैं सुन रहा था जो ये कह रहे थे। कानून का आदेश था, कोर्ट का आदेश था कि रास्ता बनाना है, उसे तोड़ दिया जाए। कहां मानते हैं, ये कोर्ट का आदेश? अगर कोर्ट का आदेश मानते तो इनका मुख्य मंत्री जेल नहीं जाता। कल्याण सिंह जी उस समय मुख्य मंत्री थे, वे जेल नहीं जाते। इधर लगातार 2002 के बाद जो टिप्पणियां आयी हैं, सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणियां आयी हैं - कहां मानते हैं ये कोर्ट की बात? इनके दिमाग में सिर्फ एक वोट बैंक होता है। वर्ष 2007 में चुनाव होने वाला है ... (**व्यवधान**)... 2007 में चुनाव होने वाला है। ये विकास की बात कर रहे थे ... (**व्यवधान**) हमने 15 वर्षों तक राज किया है, कोई एक-दो वर्ष राज नहीं किया है ... (**व्यवधान**)... माननीय सदस्य विकास की बात कर रहे थे, गुजरात में क्या विकास हो रहा है, क्या नहीं हो रहा है, यह देश को पता है। भले ही ये विकास के नाम पर अपनी रोटी पका रहे हों, लेकिन ऐसी स्थिति नहीं है। गुजरात में इनकी राजनीतिक स्थिति बहुत खराब है। ये चाहते हैं कि 2002 की तरह कोई ऐसा काम किया जाए कि फिर धर्म और संप्रदाय के नाम पर ध्रुवीकरण हो। इनको साफ दिखाई दे रहा है कि बिना उस प्रकार का रास्ता अख्तियार किए हुए पुनः गुजरात में सरकार नहीं बनेगी। हमारे मित्र कह रहे थे कि वे पुनः गुजरात में सरकार बनाने जा रहे हैं, लेकिन ऐसी स्थिति नहीं है। सामान्य स्थिति में गुजरात में इनकी सरकार नहीं बनेगी। हां, वे इस प्रकार के हथकंडे अपनाने का प्रयास कर रहे हैं, ताकि वहां किसी तरह सांप्रदायिक ध्रुवीकरण हो जाए, फिर इनकी सरकार वहां बन जाएगी ... (**व्यवधान**)... लेकिन, काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती है, काठ की हांडी आग पर बार-बार नहीं चढ़ती है, एक बार चढ़ गई, चढ़ गई, लेकिन दोबारा नहीं चढ़ने जा रही है। इसलिए मैं कहता हूं कि दोबारा गुजरात में इनकी सरकार नहीं बनने जा रही है ... (**व्यवधान**)...

उपसभापति महोदय, समस्या को सुलझाना कठिन नहीं था। अगर जिला प्रशासन, नगर निगम, सरकार इसे सुलझाना चाहती, तो वह कोई बहुत बड़ी समस्या नहीं थी, लेकिन वह इसे सुलझाना नहीं चाहती थी। अगर वह उस समुदाय के लोगों को बुलाकर, बिठाकर उनसे बात की होती, तो कोई रास्ता निकल जाता। श्री येचुरी जी कह रहे थे कि सड़क, उस दरगाह पर encroachment कर रही है, वह दरगाह encroachment नहीं है सड़क पर, बल्कि सड़क उस दरगाह पर encroachment कर रही है। जब 300-400 सालों से यह ऐतिहासिक दरगाह बनी हुई थी वह कैसे सड़क पर encroachment करेगी?

उपसभापति जी, बड़ोदरा की हिंसा को रोकने की बात नहीं हुई, बल्कि अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों को उकसाने और अपमानित करने की बात हुई है। राज्य सरकारें अगर दंगा रोकने में सक्षम नहीं होती हैं, तो यह कलंक की बात है। वर्ष 2002 में इनकी पार्टी के नेताओं ने भी गुजरात की घटना को कलंक कहा था। जो राज्य सरकारें दंगा नहीं रोक पाती हैं, उनके लिए कलंक की बात होती है। अगर उसमें वे सहयोग देती हैं, राज्य के द्वारा वह दंगा कराया जाता है, तो यह और भी बड़े कलंक की बात होती है।

श्री उपसभापति : भंडारी जी, अब आप समाप्त कीजिए।

प्रो॰ राम देव भंडारी : यहां केन्द्र में यू॰पी॰ए॰ की सरकार बनी हुई है, गृहमंत्री जी ने 3 दिनों के अन्दर अर्ध-सैनिक बलों की 9 कंपनियां भेजी थीं। मैं होम मिनिस्टर साहब को इसके लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। केन्द्रीय सरकार ने उस समय त्वरित कार्यवाही की, राज्य सरकारों से भी संपर्क किया। देश का जो धर्म-निरपेक्ष चरित्र है, जो सांप्रदायिक सद्भावना है, यदि कोई भी राज्य सरकार उसको छिन्न-भिन्न करना चाहती है, तो उस राज्य सरकार के खिलाफ निश्चित रूप से कार्यवाही होनी चाहिए। मैं अपने बी॰जे॰पी॰ के भाइयों से निवेदन करना चाहता हूं कि सरकारें तो आती जाती रहती हैं, मगर देश का जो धर्म-निरपेक्ष चरित्र है, सांप्रदायिक सद्भाव है,उसको मत तोड़ो, उसको तोड़कर वोट बैंक मत बनाओ। इन्हीं शब्दों के साथ, मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री जयन्ती लाल बरोट: वहां के लोग गुजरात की सरकार के साथ हैं। अभी जो पांच स्थानों पर महानगरपालिका के चुनाव हुए, उनमें बी॰जे॰पी॰ 90 परसेंट जगहों पर जीतकर आई है, वह कहां से जीतकर आई है? सिक्का नगरपालिका में हम 21 सीटें जीतकर आए हैं।

श्री रुद्रनारायण पाणि: आप तो नगरपालिका के चुनावों में जमानत तक बचा नहीं पाए हैं।

SHRI C. RAMACHANDRAIAH (Andhra Pradesh): Thank you, Sir, for giving me an opportunity. Sir, this has become a routine to discuss about the communal disturbances in the august House. In my eight years as parliamentarian, this is the seventh time, I am participating in such a discussion. This reflects how secular we are, and my colleague, Shri Sitaram Yechuri, has rightly mentioned about the secular character of the country. But, how secular is secular India, and who is secular? I think, the Indian people are more secular than the Indian politicians. The common man is more secular than the politicians in this country, and we have been trying to take advantage of every situation to garner votes. One party is trying to garner votes of the majority, another party is trying to garner votes of the minority, and honestly, I am admitting

that no party is sincere about their well being, and they only want to garner votes. I should admit honestly that this particular incident, which has happened in Gujarat, would have been manageable if the administration had behaved with a sense of objectivity. But, this has not happened ...*(Interruptions)*...

श्री उपसभापति: अलका जी, सब सुन रहे हैं, पूरा हाउस सुन रहा है, बताने की जरूरत नहीं है।

SHRI C. RAMACHANDRAIAH: Sir, in Gujarat, the wounds of 2002 Godhra incident are yet to be healed, and again, this incident has happened. I was wondering that the particular shrine, which has been demolished, was being managed by the Hindus. I read this in a magazine, and people were so secular that they have been managing the sufi saints shrine, and it is very unfortunate that this incident has taken place, Sir, I will tell you that the Chief Minister of Gujarat was having a very good opportunity to erase his image of 2002. He was having a very good opportunity. He has missed it. The reports which we are reading, show that even after hectic telephone calls, police was not attending to the victims even after one-and-a-half hours or two hours. That shows the lack of objectivity, lack of sincerity on the part of the administration to control the incidents, and the officials were aware of the whole situation. I would like to refer to the statement of the Commissioner of Police. The Commissioner of Police says: "The police had warned of the communal flare up during the demolition. But, the Municipal Corporation insisted that we are prepared for the trouble." This was what the Vadodara Police Commissioner told the *Frontline*. Sir, to what extent, he has been equipped, to what extent, he was committed to control the situation, and he admitted that he was aware of this flare up; he was aware that this particular incident is going to lead to the communal flare up. But, in spite of that, he has allowed it. This all gives a wrong picture that the administration has totally failed. I am not accusing them because it is being run by a particular party, and people are living in mistrust, distrust. I am only telling you that a particular officer, who was the Commissioner of Police, and during whose tenure, the notorious Godhra incident took place, he has been posted as the DGP there. How can victims of this incident have trust in such an administration? It is a very sorry state of affairs. Sir, most of the communal incidents are being perpetrated by the local elements. But they are being abetted by outside forces. You take

the recent killings of Hindus in Jammu and Kashmir. Sir, I come from a village where I am being called as 'uncle' by the Muslim people. I come from such a village. People in village are living in perfect harmony. Small incidents will take place. But, we should have the sagacity and capability to solve them, and when we try to take advantage of this situation just for our survival in politics, this sorry state of affairs arises, which is to the detriment of the nation. Sir, in most of the incidents, the local people are participating. I have seen some incidents in Andhra Pradesh where very poor people are being engaged for this purpose, the most gullible people. And it is because of the poverty that is prevailing in the country, or it is because of the unemployment that is prevailing in the country. Terrorism or factionalism, I am honestly telling you, Sir, is all pervasive in the State of Andhra Pradesh. Sir, I am using these words 'all pervasive'. It is perpetrated by the poor people alone. They are being engaged at Rs. 150/- or Rs. 200/- per day. And for killing a fellow, five thousand rupees can be paid. That is the price of a human being! So, the particular problem of poverty has to be eradicated. Thanks to the Governments which were in power for a major period of time; they have failed in eradicating poverty in this country. I do not want to take much time, Sir. Let us, all the political parties, not try to take advantage of the situation. When we are trying to come to a consensus on particular issues, in sharing the positions, or I can say, even on the office of Profit Bill, why can't we have a consensus on issues like this? Let us play politics on other issues, but not on communal issues. Sir, we have to give an image to the outside world that India is very secular. We can live peacefully only in harmonious conditions. We cannot live in disturbed circumstances. We cannot improve the economy of our country; we cannot achieve a growth rate of more than eigth per cent if there are disturbances in the country. And it is very difficult to attract investments also. India cannot be respected in the comity of nations. So, in the interest of the nation, let us resolve that we will uphold the principles of secularism in this country. Thank you, Sir.

SHRI MANOHAR JOSHI (Maharashtra): Thank you very much, Sir, for giving me permission to speak on this very important issue. Mr. Deputy Chairman, I am, indeed upset by the incidents that took place in Gujarat. I know that it is always painful to see the death of somebody and, therefore, it is absolutely necessary to go to the root cause in the interest of the nation and find out what are the reasons for such type of incidents. Sir, I was

6.00 P.M

Chief Minister of the State of Maharashtra, a very advanced State, for a period of four years. When I became the Chief Minister, everybody thought that since I was the Shiv Sena Chief Minister, there might be communal riots between Hindus and Muslims.But this is a fact that during those four years, no communal riot took place in the State of Maharashtra excepting one incident in Raigad District. But I immediately flew to the spot and nothing further happened. Therefore, I have come to the conclusion that it is possible to stop such riots or, at least, to control such riots. But, Sir, today, the question before me is whether we want a development or whether we do no want a development. The other day, I spoke on a Bill which was brought before this House about extending the one year period for the unauthorised structures in Delhi, and when I spoke on that day, I also mentioned the same point. Once and for all, we have to decide whether we are pro-development or whether we are anti-development. Sir, in our country the things do not go smooth. Whenever we want to do certain things strictly, there are people to oppose them; there are people to stop them. In the case of Gujarat, particularly in the case of Vadodara, the same thing had happened. An attempt was made by the Chief Minister of Gujarat to have the entire year 2006 as Urban Development year. The urban problems are growing in the country. The Gujarat Chief Minister thought that this was the right time to go ahead with the Urban Development Year and remove the unauthorised constructions, and, therefore, he took up a programme of construction of a road. What was wrong in it? I personally feel that construction of roads, construction of highways and construction of dams are the most important activities from the point of view of urban areas. When you start such activities, there are people who would like to obstruct it; sometimes, in the name of poverty and, sometimes, in the name of religion. When I go abroad, I find the other countries are developing. Even those countries which became independent after we became independent have progressed three or four times more than that of our country. The only reason is that there are certain people, a certain section of the people, who do not want development to take place. If the Chief Minister of Gujarat has done something, it is only to develop Gujarat at any cost and in the face of criticism. I think, the entire country can develop only if we are firm. Unfortunately, that does not happen.

I have a Press statement made by Shri Shriprakash Jaiswal, the hon. Minister of State for Home Affairs, where he says, "The clash was

not of communal nature, but between the district administration and members of a particular community". It shows that the hon. Minister of State for Home Affairs agrees that this was not a clash between the two communities. This was not at all a clash between Hindus and Muslims. This was a clash between the administration, on the one side, and those who wanted to stop the development, on the other.

Sir, I have been listening to the debate in the House and the question before us is whether one should go ahead with the devleopment of a particular place, or, one should go ahead with a little interest of catching maximum votes. If we are honest enough, I am sure, everybody will agree that peace is more important than the politics that we wish to preach. If this is accepted and, from this point of view, if one goes to the details as to what happened in Gujarat, he will find that all proper steps were taken and every due care was taken by the administration before starting the construction of a road. The first and foremost thing required is to give notice. I am speaking from the records which are available to me. Proper notices were served on on the Dargah on Mandvi-Champaner Gate Road where the demolition was to take place. After the notice, a meeting was also called. In the meeting, a decision was to be taken whether the *kabar* was located within the road line as per the records of the City Survey superintendent dating 1905-1912, of which there was no property card. This particular *dargah* or *Kabar,* whatever we may call, was in the way of construction. The question before the authorities was to find out whether it was as old as some Members have said. Therefore, the representatives who had come on behalf of the *dargah* were asked to produce the documents—not once—firstly by giving a notice and secondly by convening a meeting. In this regard, it was found that although a request was made, no substantial proof was produced. In the meeting, not only the Municipal authorities, the Mayor of the City, other representatives of people were present, the Police Commissioner, the Deputy Police Commissinor were also present. It means that it is known to everybody. If somebody says that I am at this place for more than 100 years, but there is no proof, what can the authorities do except demolishing it? Therefore, the demolition of the structure was absolutely right.

(*Interruptions*)

श्री उपसभापति: आप बोलते रहिए। ...(**व्यवधान**)... आप बात कर रहे हैं, उस वक्त ...(**व्यवधान**)...

श्री धर्म पाल सभ्रवाल (पंजाब): इतना पुराना रिकॉर्ड तो प्रशासन के पास होगा, न कि लोगों के पास होगा। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: सभ्रवाल जी, वे बोलेंगे ...(व्यवधान)... राष्ट्रपाल जी बोल रहे हैं। ...(व्यवधान)... आप बोलिए।

SHRI MANOHAR JOSHI: Sir, I am referring to the records. ...*(Interruptions)*... There was no property card. (*Interruptions*). I am saying it from the record ...*(Interruptions)*... Presuming that there was a property card. Firstly, the record does not say that they produced a property card. Secondly, if there was a property card, another thing was suggested by those people that keep half of the *kabar* here and half of the *kabar* be shifted. The Municipal Commissioner requested that it was not possible; we may be able to shift you from this place to another, which was also rejected. Sir, in these circumstances, somebody goes into the shoes of the Municipal authorities. Can he tell me what is the other way except removing the structure? The Municipal authorities, the Collector of the District and the Municipal Commissioner along with the Mayor and the representatives of the people, decided to demolish it. A compromise formula suggesting partial removal was put forth, which was acknowledged by the VMC,Vadodara Municipal Corporation but no final decision was taken as the same could be taken after examining the issue from a legal angle. A letter received by fax on 30th April from local residents was also taken into consideration. There was another side also. There were other people also who were insisting that when you construct a road and if there also a religious place comes in-between, action will have to be taken. Therefore, this matter has to be examined from the administrative point of view. I agree with the hon. Minister of State when he said that this was not a question between two religions. This was a question between the Administration and the people of certain place. Now those people did not agree to raze it. The demolition started on 1st May, 2006 when all the authorities were present on the spot. A strong crowd tried to obstruct the team of the Vadodara Municipal Corporation. Unfortunately, firing was done. It is not that the firing was done immediately. All other measures were also tried. When they did not succeed, the firing was done. Two persons died and 25 others got injured. Thereafter, in the city itself, four people died, and six police stations areas out of 13 were affected. So, these are the details. It is a very simple

matter, and in this simple matter, we have to decide whether we want peace in the country or we want politics to prevail. If we sincerely desire it, I do not want any Member of this august House to try and play politics, and thus disturb peace not only in Gujarat but also in the entire country. I must say, after my experience of four years as Chief Minister, these issues are flaring up only because of appeasement of a particular community. I am extremely sorry to say this. But I say this with great regret that communal feelings of a particular group flared up because we try to appease some groups get and that is not good for us. I remember, during my tenure, a lot of people approached me with a lot of requests. But I never looked at them from communal point of view. I remember; at that time, in a particular place, people were sitting on the footpath and offering *Namaz*. People came to me and said, "Since there is no place in the Masjid, we have to sit on the roadside and pray." I told them, "If I give you additional FSI, you can construct more parts in the Masjid and, definitely, your problem can be resolved." Those people agreed. So, additional FSI was given, and the problem was solved. In this particular case also, every attempt was made. I know the hon. Home Minister has great responsibility in replaying to those questions. This, I told the Urban Development Minister yesterday also, that unless and until he brings the rule of law, the country would not progress. Without taking a decision about slum dwellers, he has just given them one-year period. I am sure even after this one-year period, he will come back to the House. I must tell the hon. Home Minister that he must take a decision that in the matter of development, irrespective of whether a person belongs to a particular community or a particular religion or a particular caste, the law must prevail and justice should be done in the same way. If that is not done, how do we expect development to take place? In the name of religion, if somebody constructs certain unauthorised structures and do not co-operate with the administration, what can the administration do? We, ultimately, try to blame the bureaucrats. But the bureaucrats behave as per the decisions of Parliament. Let me tell you; if they look at the way in which we are shouting against each other, the way in which we are behaving in the House,—this is all being watched by the people of the country—they will feel that this highest democratic temple is also not taking decisions peacefully and calmly. Therefore, on this issue, I am of the firm opinion that in the matter of unauthorised construction, whether it is a temple or a house or a commercial area, if somebody is coming in

the way, then the progress of our country will come to a halt. No politics should be brought into this. I am also confident that the day will come when we have to follow all these and go ahead with the development. I am indeed happy that the Chief Minister of Gujarat has decided that he would go ahead with development in spite of hindrances that come in the way. Indeed, I wish to congratulate him for the kind of development that has taken place. I would also like to say that if we want progress of the country, let us not talk of religion. This must be seen in the larger interest of the nation, and petty politics should not be brought into this. Thank you, Sir.

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: सर, मैं एक मिनट के लिए अपनी बात कहना चाहती हूं।

श्री उपसभापति: नहीं, बाद में।

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: सर, मैं एक ही मिनट बोलूंगी। आपकी परमिशन लेकर मैं यह बात इसलिए बोल रही हूं क्योंकि बार-बार ये कह रहे हैं कि दस्तावेज़ नहीं मिल रहे। लेकिन बड़ोदरा के मेयर को जब 1912 के दस्तावेज़ के बारे में बताया गया तो उनका जवाब था कि आप 1912 के दस्तावेज़ की बात कर रहे हैं, 1943 के दस्तावेज़ में पाकिस्तान भारत के साथ जुड़ा था, तो क्या हम पाकिस्तान पर अपना दावा ठोक सकते हैं। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: नहीं, नहीं। आपको पहले बोलना चाहिए था। ...(**व्यवधान**)...

श्री रामदास अग्रवाल (राजस्थान): उपसभापति जी, जिस तरह से शांतिपूर्वक जोशी जी ने अपने विचार रखे हैं, उस वातावरण को खराब नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि उस शांतिपूर्ण वातावरण को हमें आगे बढ़ाना चाहिए।

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL (Gujarat): Mr. Deputy Chairman, Sir, let me inform you that I am a very junior Member of this House.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You are a former Member of the Lok Sabha. Why do you say that? ...*(Ineterruptions)*...

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: This is my maiden speech, and I request my colleagues on that side, particularly the Members of Rajya Sabha from Gujarat, not to interrupt me. I also request my senior colleague, Shri Vinay Katiyar,—I sympathise with him for his loss in the election—not to interrupt me; ...*(Ineterruptions)*... I also request my senior colleague, Shri Arun Jaitley not to interrupt because they are going to speak after me.

Sir, the subject today is communal violence, and not property card and hundred-year proof. Some people don't know the difference between

a *kabar* and a *dargah* also. A *kabar* is for an ordinary human being and a *dargah* is for saint. Let us not give incorrect name to the very pious places, whether they belong to this community or that community. If you don't know the meaning of the word, you should not utter it. I may refer to other places; we are not talking only of Vadodara Sir, in the recent past, we had communal riots in Aligarh, we had communal riots in Lucknow, and, then, the last riots took place on 1st or April or surrounding that date in Vadodara. The dispute is not about development and non-development. Nobody here is against develpment. I expect that no Member of Rajya Sabha is against development. Are you against development?

AN HON. MEMBER: No.

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: We cannot. I don't know why they are misinforming and misdirecting the very purpose of the decision. I am against violence. This Parliament in this country has celebrated Baishakhi Poornima only a few days ago. The greatest man of the world, Lord Buddha, the country is celebrating the 2550th anniversary of Lord Buddha's Mahaparinirvan. The State of Gujarat is celebrating the year 2006 as a Tourism Year. May I know from the Members of Rajya Sabha of Gujarat when violence takes place in Vadodara, whether tourism will increase or tourism will go to Rajasthan and Madhya Pradesh? I am worried about that, because this House is known as the Council of States. We are here not to talk about any individual; we are here to talk about the issues of the States. And, I am sure, all Members of Rajya Sabha from a particular State should talk in favour of that State. I don't know why there should be contradiction. I remind my friend, Shri Jayantilal Barot and my sister, Alka and many other Members of Rajya Sabha from Gujarat that when the Securities Scam took place, we were all worried about the small depositors. It was a Rs. 1200 crore scam. I am very sorry to refer to the scam in Madhavpura Cooperative Bank. It was a hundreds of crores of rupees scam, and, that too, of small depositors. As a Member of Rajya Sabha, I am supposed to support the case of small depositors, and not of Ketan Parikh. Let me make a statement that on the one side, we talk of democracy, we talk of clarity and we talk of character; and in Rajya Sabha, we criticise this party and that party, and, as a lawyer, I go and defend Ketan Parikh! Who is right; one who is defending the small depositors, or, one who defending Ketan Parikh? I make a statement: There is a crisis of character in this country. There is a crisis of character

among the leaders of this country, of a particular party, of a communal force, of a fascist party, and we are against that. We are not against the BJP as a political party. We will not talk of any political party here. We do not approve communal violence, whether it is communal violence between Dalits and other Hindus, whether it is communal violence between Shias and Sunnis, whether it is communal violence between Hindus and Muslims. We are against all types of violence. We cannot approve of violence. We cannot. We belong to the country of Lord Buddha. We belong to the country of Lord Mahaveer, we belong to the country of Mahatma Gandhi. Many sainst too. One of them was Khwaza Moiduddin Chisti. He needs no introduction in this country. Gareeb Nawaz Khwaza Moiduddin Chisti came to this country from Samarkand Bukhara before 700 years and he came to Delhi and then he went to Ajmer. He died there. The world famous Dargah of Khwaja Moiduddin Chisti is there in Ajmer and I am sure, everyone sitting here must have visited that Dargah. It is not Dargah of only Muslims. Ajmer is visited and prayed by Hindus and Muslims both. Some of the disciples of Khwaza Moiduddin Chisti went to other parts of the country and one of them came to Ahmedabad and we have got a Chisti Dargah in Shahibagh area, just next to Raj Bhavan which was built by Shah Jahan himself. And, right now, the monument of Sardar Patel is housed there.

My very senior colleague and previous Chief Minister of Maharashtra was talking about the property record. Will you please give me the property record of the Raj Bhavan of Ahmedabad, which was built by Shah Jahan? Because there is no property record, can we demolish that? Can you produce the certificate of my grand father when there was no system of birth certificates? He is very much alive and he is more than a hundred years. Suppose I do not produce his certificate, should he be removed from my house? What is this? What are these arguments? Let us not talk of these.

One of his disciples went to Ahmedabad and another went to Baroda. His name was Rasiduddin Chisti. He went to Baroda before 380 years and this Dargah is of Rasiduddin Chisti and it was in existence during the regime of Maharaj Gayakwad. It is there. All historical stories are there. I have got all news cuttings and let me tell you, my dear friend, I am prepared if you appoint a Committee of this House. Let them go to Baroda and find out whether even after the demolition of the Dargah, the road is widened

or not. I am told by a citizen of Baroda that the road cannot be widened because there is Champaner Gate in between the road. You have demolished the Dargah, next to the Gate. But the historical Gate of Champaner cannot be demolished by the Baroda Municipal Corporation. It is not demolished and it will not be demolished. Then, what is the use of that demolition? Are you experts in demolition? Yes, some of you are experts in demolition. The Babri Masjid was demolished on 6th December, 1992 and the*

SHRI RAVI SHANKAR PRASAD:*

श्री प्रवीण राष्ट्रपाल: अच्छा मैं नाम नहीं लूंगा ...(**व्यवधान**)...

श्री रूद्रनारायण पाणि. *

श्री उपसभापति: नाम निकाल दिया है ...(**व्यवधान**)... पाणि जी, आप बैठ जाइए ..(**व्यवधान**)... यह रिकॉर्ड पर नहीं जाएगा ...(**व्यवधान**)... आप बैठिए, आप बैठिए ...(**व्यवधान**)...

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Sir, very correctly, ...(*Interruptions*)... I will again go back to Baroda. So, a decision was taken, the people had discussion, very senior people, in in-charge of dargah went to the Baroda Municipal Corporation. The whole story, is they were given an assurance and they had offered that the superstructure may be removed. You know the dargah will be hardly five feet or six feet in length and two or three feet in width. So, that is the main part of the dargah as in a temple we say the sanctum sanctorum गर्भद्वार जिसको बोलते हैं, वह रहना चाहिए।

For demolition of the superstructure, the community was prepared. And this has rightly referred to the map of 1912 and 1945. I have got English translation of the statement made by the Mayor of Baroda, "Why do you talk of 1912 map? I will show a map of 1945 of India where Pakistan is very much within India during 1945. Can we make claim for Pakistan on the basis of 1945 map?" That was the statement made by the Mayor of Baroda before the Muslim leaders when they went along with 1912 map. Now that 1912 map is very much there and there is proof that the Gaekwad himself had replaced the dargah during his regime, the Maharaja of Gaekwad had replaced this darghah once. This is the second

*Not recorded.

time. It is not a replacement; replacement is permissible by performing certain puja. What is now going on in Narmada Project? The entire towns and villages are submerged. Do you know that? In Madhya Pradesh and in Gujarat when you construct dams, thousands of acres of land will submerge. There will be a number of dargahs, there will be a number of *kabars* and there will be a number of temples which will all be allowed to submerge. Nobody will take objection to that because it is for development. We are not against development. But systematically a statue of any lord or any god, which is there is a temple, will be taken out. If there is any sufi saint dargah, that *miti* will be removed and taken to another place. These are the methods, which should be known to those who are ruling in a particular district, those who are ruling in a particular State. So, this was the objection. There is another very serious statement made by a police officer, and one of my senior colleagues referred to a man who was burnt along with a vehicle. Somebody telephoned the police station. "If you come here with a fire brigade, we can save the man because he is inside and the car is burning." The reply of the PSI was टेलीफोन पाकिस्तान को करो। ...(*Interruptions*)... That is the attitude. ...(*Interruptions*)... I can give the name of that man who telephoned. I can give you the name of the PSI and if you want you can collect the proof from the company of the mobile phone also. All these things are there. ऐसा रिप्लाइ दिया। ...(व्यवधान)...

This newspaper is published by a BJP man. ...(*Interruptions*)...

श्री उपसभापति: पेपर मत दिखाइए, अखबार नहीं दिखाना चाहिए।

SHRI RAVI SHANKAR PRASAD: He is showing a newspaper. ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You have seen that I have stopped him. ...(*Interruptions*)...

SHRI RAVI SHANKAR PRASAD: He is a new Member. He must know the rules. Please tell him. ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I have reminded him about the rules. ...(*Interruptions*)...

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: This action of the official was supported by the local political leadership. That is the problem. In fact,

*Not recorded.

the same thing happened during the worst communal riots a few years before, that is, in 2002. If at that time it was the head of the State who was involved in the ethnic cleansing in Gujarat, It was State sponsored terrorism in Gujarat, now this time it is the failure of the local administration and not, definitely not, of Gandhinagar. I will say Gandhinagar is not responsible for what happened in Baroda. But, it was the failure of the local police and local Municipal Corporation of Vadodara. You will have to admit that because they have miserably failed. It was very easy. I agree. Many Hindu temples were removed voluntarily by the Hindus. I agree. One thing, again, there were no communal riots between Hindus and Muslim in Vadodara. One thing is also correct that it was an aggression by Police on the Muslims but the Police were supported by non-Muslims. That happened against me when anti-reservation riots occurred in Ahmedabad. My *basti* was attacked by those who were against reservation. What is going on right now? What is going on in this country right now? They oppose reservation. Has this Parliament not passed legislation under article 15?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, then you are going on a different subject. When we take up reservation...

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: No, Sir, when Dalits are attacked, Police and non-Dalits will join together. Nobody has sympathy for poor people. Nobody has sympathy for minorities when aggression takes place. That was the problem. I again say that it was not violence between two communities but excessive violence, excessive use of force, of lathi-charge and tear gas. My colleague had actually visited. I could not go there because I was in the hospital. In fact, my party selected me and said that Shri Praveen Rashtrapal should be sent. Even now I am prepared. Sir, you appoint, not from Congress or from BJP. Let us send people from any other political party. Let them go to Vadodara and verify. Believe their reports. Don't believe me. Don't believe my friend, Maniyar because we belong to that State. We are prepared. We want peace. We want development in Gujarat. We do not want development like this because they are talking too much of development. I will tell you what development is going on in Gujarat. Check dams, I request you to go through E-TV programmes where it is proved that 700 check dams were built and washed away in one rainy season. "Sujalam Suphalam", a Committee of Members of Gujarat State Assembly from all parties was constituted and headed by one Lady MLA, Dr. ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Don't use the names who cannot defend. Say on MLA.

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: No, Sir, there is no development in Gujarat. Yes, I will not give names. The Chief Minister of Gujarat wrote a letter to the Water Resources Minister requesting him to call a review committee meeting.

SHRI RAVI SHANKAR PRASAD: Gujarat Development issue...

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: No, I am not yielding. I am not yielding.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Everybody has talked about development. If you say development...

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: If you talk of development, let me tell you the truth. The Chief Minister of Gujarat has written a letter to the Central Minister of Water Resources to call a Review Committee Meeting and accordingly a review committee was called and when he came down to Gujarat he said...

श्री जयन्ती लाल बरोट: अगर जल संसाधन मंत्री मीटिंग नहीं बुलाते तो ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: बरोट जी, यह क्या बात है? ...(**व्यवधान**)... This is too much. (*Interruptions*)... Please sit down.

श्री विजय कुमार रूपाणी: पत्र लिखा था ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down. ...(**व्यवधान**)... आप जो चाहते हैं, वैसा नहीं बोलेंगे। ...(**व्यवधान**)...

श्री जयन्ती लाल बरोट: वह गलत बात कह रहे हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: गलत बात के बारे में आप बोलेंगे, तो क्या सर्टिफिकेट हो गया? ...(**व्यवधान**)... डिबेट में वह जो कुछ कहना चाहते हैं, वह कहेंगे। ...(**व्यवधान**)... आप बैठ जाइये। ...(**व्यवधान**)... यह सही बात नहीं है। ...(**व्यवधान**)... जितना अधिकार आपको बोलने का है, उतना ही अधिकार उनको बोलने का है। ...(**व्यवधान**)... आप बीच में इंटरेप्ट मत करिये। ...(**व्यवधान**)... गलत है या सही है, इसके बारे में डिसीजन देने के लिए आपको किसी ने नहीं कहा है।

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: My main objection is, illegal construction can be demolished not any construction. Encroachment is

illegal. If it is encroachment on a private property it is has to be demolished. That is the Supreme Court order. I know why they are doing it. Somewhere we are ruling the Corporation and somewhere they are ruling. The Supreme Court has ordered that there should not be construction at a certain feet on the Highways. There should not be construction on the roads. In Delhi also it happened. Why all we have become a part of the Bill which imposed moratorium for one year? Why have we not opposed that? We have passed Delhi Laws Bill. There, illegal structure can remain for one year and illegal structures in Vadodara should not remain for three minutes! Vadodara structures should be removed immediately, whereas for illegal structures in Delhi we want an exemption for one year! Everybody voted in favour of that Bill. And, Mr. Khurana, was the main man who wanted that Bill and he belongs to the party which is shouting. So, let us not be political. भाइयो, अब मैं थोड़ा हिन्दी में बोलूंगा। जंग मत करो। जंग होती है तो खून बहता है, और जो खून बहता है, वह आलम-ए-आदम का होता है। जंग मत करो। जंग मगरिब में हो या मशरिक में, जंग जंग होती है। जंग होती है तो खून बहता है और जो खून बहता है, वह आलम-ए-आदम का बहता है। एक बेटा मरता है तो मां बिलखती है। आपके किसी के घर में जिस दिन कम्युनल रायट्स में अपना बेटा मर जाएगा, तब आपको पता लगेगा कि कम्युनल रायट्स क्या चीज़ है। मेरे स्वयं का भतीजे का बेटा पिछले कम्युनल रायट्स में मारा गया इसलिए मुझे पता है कि कम्युनल रायट्स क्या होता है। एक बेटा मरता है तो मां बिलखती है, एक शौहर मरता है तो बीवी बिलखती है और एक बाप मरता है तो बच्चे अनाथ हो जाते हैं। जंग मत करो। जंग होती है तो खून बहता है, यही बात करके मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। This is the House of elders. This is the Council of States. Let us behave as senior citizens. Let us behave as the Council of States. Let us, today, decide that from now onwards there will not be communal riots in Gujarat. Why there are no communal riots in West Bengal? Why there are no communal riots in Kerala? ...(*Interruptions*)... There are many such States. I congratulate them.

SHRI RAVISHANKAR PRASAD: Who said that? ...(*Interruptions*)...

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Sometimes there are ...(*Interruptions*)... Rarely they take place ...(*Interruptions*)... There are States where the communal riots never take place. There are States where communal riots take place regularly. For example, Ahmedabad, Godhra, Surat, Vadodara. लखनऊ में बार-बार होता है, अलीगढ़ में भी होता है। I am appreciating those States where there are no communal riots. But, I want Gujarat should be number one in peace.

AN HON. MEMBER: What about development?

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: First we should have peace. What are you talking of development? What is the use of development when there is no peace? Social fabric of the society has to be maintained. You know what is the social fabric? We talk very good over here. I known what is the situation in Gujarat. I know what is the situation of a dalit in a UP village. I know what is the situation of a dalit in a Gujarat village. We know it. So, let us not discuss all these things. Let us, at least, decide one thing that in future there will not be communal violence in the name of community.

With these few words, I conclude my speech. Thank you everybody.

SHRI ARUN JAITLEY: Mr. Deputy Chairman, Sir, what should, as my friend, Mr. Yechury, mentioned in his opening comment have been otherwise a non-partisan approach to a political or a social situation has become, obviously, a very partisan debate. I don't think there are any two views about the fact that whether it is the killings in Doda or whether it is a communal disturbance in Gujarat or a social caste disturbance in some other part of the country, the normal approach of the civilized society should be uniform. And, therefore, we should be really, as the House of elders as Mr. Rashtrapal has just mentioned, concerned about how to deal with that situation and how to make sure that such incidents, be it of caste, be it of religious tensions, be it of terrorism, do not occur. But the difficulty arises when we decide that these incidents are to be used not to learn a lesson for the present and find a solution for the future, but, these incidents are really to be used with object of targeting each other and then some of these incidents we realise and fall into a temptation, can also have implications on electoral politics. Before I come to the incident that has taken place in Vadodra, what it is that we really are discussing, what the core of the debate is. The core of this debate was merely because a *dargah* or a *kabar* had to be shifted or removed, it was, probably, easier to come to a solution. But the core issue is on that incident an upheaval is to be created in the city and then, in the whole country, and, then, polarisations are to be achieved, the solution becomes all the more difficult. When some of us decide to use an uneven hand in dealing with these siutations the problem worsens. Before I deal with the Vadodra situation, let me just mention—I am not referring to the gruesome incidents of Doda—how incidents and events take place, and what is really the true

meaning and content of secularism in India. A Minister in a State Government had the audacity to say, "I will give fifty crores to somebody who brings me the head of so and so". Now, any civilized or secular society would have demanded that he should immediately be sacked, he should be prosecuted. But, then, by doing so, he had sent a large message to a constituency which was going to support him. The party, to which he belonged, found itself unable to react. I saw an unfortunate incident the other day, nowhere else in the country, but at the door of the Prime Minister's residence. We have a free Press in India. The Press puts each one of us inconvenient questions. A delegation went to meet the Prime Minister and came out. A inconvenient question was put. The response was that the journalist was based up. The journalist offered a protest. The hon. Home Minister went there and said that he would look in to the matter and do the needful. But if an FIR had been lodged against him, could it be construed as a non-secular polity? And, therefore, an attack on a jounalist before the national television, we were compelled to a situation where the society decided to look the other way. These are some of the incidents. I can count indefinite number of them. Shri Sitaram Yechuri was very vocal when he said,"Why have you used the POTA in the case of Godhra?" And, before I go to the Vododara situation, I think, the response all that gone on record is required. You had an unfortunate incident. I don't go into the details and prejudge the incident. A train was set on fire. What has been the approach of a large number of people in this country? He was very vocal; and, he said, "Your Government in Gujarat was held to be bais in relation to the post-Godhra incidents". But whether it was Godhra or post-Godhra, they had to be dealt with either by the BJP Government or by the Central Government with the same approach. But what was the attitude? The police investigated the matter. The police filed the charge-sheet. The accused had moved to court. The Session Court rejected the bail, the High Court rejected the bail, the Supreme Court considered the entire evidence and rejected the bail, not once but several times. A Review Committee goes and says, "why do you make it a case of POTA?" The Gujarat High Court says, "The Review Committee is not binding on the judicial authorities, we will independently apply ourselves". And, now we have been told that you should be bound by the Review Committee, withdraw the case. Not satisfied by this, a Committee which is to go into — normally, an Administrative Committee of the Railways is constituted—the question of railway accidents and

other problems that arise with the Railways. A railway accident inquiry is invented, now, for the first time. Somehow a message must be given to those who are accused in the Godhra case, there is somebody concerned about you. Now, I am not for a moment saying that that case should be deal with on a pedestal different from the post-Godhra riots. But once the machinery of the State and a large political establishment decide that an uneven policy in dealing with Godhra or the post-Godhra, then, a serious question arises what really is the content of secularism in India. Is it only to give a particular kind of a signal that you go into these questions? Let me just remind myself of one of the biggest contemporary debates. We are dealing with the Vadodara situation, which started as town planning and urban renewal exercise. The Ayodhya debate has been pending for years, for decades. Whether the disputed structure is a temple or a mosque, this issue has been pending. My party has no hesitation in saying that we are deeply committed to that particular place and the temple being there at the *Ram Janmasthan*. What are we told as a point of criticism? Why are you getting into this temple or mosque debate? Suggestions are made by eminent public persons; make a hospital there, make a national memorial there, give up that claim to the site, however, sacred it may be. It may be your Mecca or it may be your Jerusalem, but, please give up your claim and agree to another institution, after all, hospitals are going to help the society more. This is the arugment which is told to us in reverse. And, today we are told, forget town planning, if there is something bang in the middle of the road, be it a Temple or a Gurudwara, or a Church or a Durgah, if it comes to a particular place of worship, then, town planning must stop. Therefore, you must think of an alternative methodology.

Let us go into what really has happened as far as the situation in the Vadodara city is concerned. The year 2005-06 is the Urban Development Year. That is the State Government's policy; the Executive Policy. Somebody has moved the court and filed a public interest litigation. Courts these days are activist courts, so, the court starts monitoring. One of the directions of the court is that not only in Vadodara, but in almost every town of Gujarat, encroachments on roads must be removed. So, in a bid to remove encroachments, whether it is Ahmedabad, Surat or Rajkot, roads are being widened and whatever comes within the line of the widened road has to be removed. In Vadodara itself, 3,299

structures have been removed to comply with the High Court direction that whatever comes in the way of road widening must be removed. As a part of removing that you had religious structures of all sides. And, Mr. Rashtrapal was absolutely right that when the Tehri Dam is built, the whole townships are submerged and villages are submerged. The Mosques, the Temples, the Gurudwaras, all had to be shifted out. When the Narmada Das is created, there is submergence and everything has to be shifted out. World, over the most precious of religious structures have been removed and shifted out. As part of this road widening, when 3,299 structures are removed in Vadodara, You have religious structures of all religious denominations which have to be removed. When I said, uneven methodology of dealing with secularism, I will in the same tone as Mr. Yechury said, say for post-Godhra cases, you were biased, and for the pre-Godhra and the Godhra case, why did you use the case of terrorism? The bais was inherent in the tone. I am asking myself a question. What if my party had put up the photograph of somebody, who is involved in some heinous offence, on its election posters? Hell would have been let loose. And, we have the main accused of the Coimbatore blasts being paraded on the posters of a particular political party and, then, very proudly you say, for the first time in the histroy, we are very progressive, we have defeated the Muslim League. Well, if you have a figure to display who is more fundamentalist than that Muslim League in Kerala, then, you are bound to succeed. Therefore, what happens in Vadodara is, 42 temples or religious structures of a majority community have been removed. Six structures of the minority community have been removed. No noise was created when these 42 plus 6 structures are removed. When it came to this structure in the middle of the road, it is not as though the administration just went away straight and started bulldozing the place. There are official, Government records. The whole case was made out that this is shown as *Kabra* in the records of 1905-1912; therefore, if it is a structure which is almost 100 years old, then, please look into the records. You had the record of the City Survey Superintendent. The local municipality called for the record. They did't find a mention of this. You had the records with the Charity Commissioner's Office. They did't find a record of this. You had the record of the local municipality; you did't find a record of this.Therefore, after doing this exercise, on the 27th of April, you issue a notice not only to this one structure but to all structure on this road, that this is the compliance

of the High Court order, please remove your structures. If you want to shift, please shift. No shifting is done. On 27th and 28th, this is repeated. On 29th, meeting is held with the members of the community and they are told if you have something to say on this, please produce all the documents. The Municipal Commissioner holds a meeting. He is a bureaucrat. Not a single document is produced. On 30th, when they meet again, a compromise is worked out and a compromise is suggested, we will stay our hands for some more time; if you want to shift, this wholly or partly, please shift this. Then, again, the hardliners take over and they say, "no shifting, it will remain". Forty two plus six others have been shifted or removed, but when it comes to one structure, they say, "no, it will not be removed." The Municipality, then, on the 1st of May had no option but to comply with the direction of the High Court. And, once, it is done, I am grateful to my friend, Shri Rashtrapal when he said that this was not a communal riot. Members of the community, whether provoked or agitated, get together. Two of them, unfortunately, die in the police action. Thirteen of them are injured. The mob was also violent. Twelve policemen are also injured. Thereafter two members of the majority community are stabbed. They succumb to injuries. It started off as a town clearing exercise. The world over, structures are removed as a part of town clearing Now, what are we really discussing when I said, what is the real meaning of the world 'secularism? Is secularism to operate only on double standards? Sir, after this incident when 42 temples had been removed, six other religious structures of the minority community have been removed, and there has been no protest. If somebody says on one structure I will create a protest, I am constrained to ask myself, after 59 years of Independence, we have not been able to enforce what Article 44 says, "The State shall endeavour to have a Unfirom Civil Code". Today, the entire tenor of this portest is, will India also have now a separate municipal code depending on religious denominations to which you belong?... (*Interruptions*)... Once you are going in for a town clearing exercise, whether it is my house or it is a public building, or, it is a park, or it is a school, or, it is a temple or a *gurudwara* or a mosque, all the religious structures there have to be shifted out. We have to educate all members of various communities, be it minority, be it majority, that world over this has been done, but, if we send a signal that Shri Madani, if you do an act which you did in Coimbatore, our State Assembly will pass a resolution in your favour. If we have resolutions of this kind and photographs and

posters during elections and memorandums to the President, if we send a signal that all right you may have been responsible for burning the train alive, but we will take up your cause; if law and order is not with us, if the Supreme Court is not giving you bail, then a railway inquiry will seek to exonerate you and create an atmosphere in your favour; if these kind of signals are sent, then, obviously, some people get emboldened on either community who will say, well, I don't want the structure belonging to my community, it may tomorrow be the majority community if they get the backing of the State, or, it may be the members of the minority community. The moment we link it with the vote bank, the first 42 + 6 structures did not get linked to any vote bank, everybody agreed; it is only this structure; therefore, Sir, when we discuss this whole issue, I think, we will have to keep the fundamental issue in mind. If all of us, the State, the State Governments, the Central Government, we as political parties, have a uniform definition of the world secularism, "that the State shall be impartial in the matter of implementing its policies... If all of us, the States, the State Governments, the Central Government, and we, as political parties, have a uniform definition of the word 'secularism' that the State shall be impartial in the matter of implementing its policies, we, the political parties, then, are not seen condoning one kind of fundamentalism, because that kind of fundamentalism brings me votes. If we dont' follow this kind of a policy, it may be really easier to resolve this problem.

Having said this, Sir, just one last point that I wish to make is that we also need a debate in this House and in the society, particularly, in the media, that in these kinds of social tensions, what the role of the media, particularly, electronic media is going to be. Traditionally, we have a discipline in this country. Whenever a caste violence or a religious violence took place, it was always in print media a case of subdued reporting was there. There was an unwritten code that even names of communities, which clashed, were not mentioned. This, of course, was not a community clash. Now, if we say that the two people who died in mob violence or in that car were members of the minority community, whose names were so and so, or, another one says that the two people who were stabbed to death were members of the majority community, whose names were so and so, let us see that we, today, live in the world of twenty-four hour television and the twenty-four hour television has a capacity to create a kind of a frenzy on some issues of this kind. When blood is shown, bodies are shown, and injustice to community is shown, whether it is in a caste

7.00 P.M

violence or a religious violence, the frenzy really can have its repercussions outside. Fortunately, in this case, all Governments were quick to act and, therefore, after the first day's incident and the unfortunate burning in that car on the second night, otherwise, the incidents were curtailed. The Central Government sent its additional security forces; the State asked for them; the State sent its entire Police force there, and the curfew was relaxed for women and children first and then for the whole community. But if we do not have some kind of a self-restraint and go back to the traditional conservatism in reporting caste and communal violence instances, particularly, taking care that the kind of incidents which display hatred, which show hate speech, which show blood, which show names of communities, names of victims, names of those who attacked, if we don't re-impose that code on ourselves, and it is a voluntary code, probably, in future if such unfortunate situations take place, they can create a situation which would be far worse. Vadodara got controlled in a day or two, but if the frenzy spreads, then it becomes all the more difficult in controlling it and, I am sure, Sir, we are learning from this experience and other past experiences. Earlier, when such troubles took place, we had, traditionally, the more conservative print media. Now, that we live in the age of a twenty-four hour television channels, they will also make sure that while reporting facts, to make sure that the kind of reportage does not create any form of feeling in the society which excites people to further kinds of sensations that provokes them to do acts which they should otherwise not be doing.

In a nutshell, Sir, the incident at Vadodara is a lesson for us, a lesson for all of us because it is not an incident of communal violence, where an incident relating to town-planning, compliance to the Court's order and disagreement by members of one community with regard to a particular structure had led to a flare-up where six people have lost their lives and some people have been injured. But, in future, the conflict resolution on these issues is one area where we still are to progress as a society, and, I am sure, that what Mr. Yechury mentioned in the beginning, but didn't really go ahead with it as he progressed, that on an issue like this if we dealt with a more even hand and had an approach to these issues which was more non-partisan, probably, our moral authority in resolving these issues and these conflict resolutions will be far higher in the society. Thank you, Sir.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri Vinay Katiyar. The BJP has taken fifteen minutes more than its allotted time. Please, keep the time.

श्री जयन्ती लाल बरोट: सर, इनका maiden speech है।

श्री उपसभापति: मेडन स्पीच तो जरूर मानेंगे, लेकिन ज़रा समय का ध्यान भी रखना होगा।

श्री विनय कटियार (उत्तर प्रदेश): माननीय उपसभापति महोदय, यहां पर जो चर्चा हो रही है, वह साम्प्रदायिक हिंसा पर चर्चा हो रही है, न कि बड़ोदरा पर चर्चा हो रही है। लेकिन अभी तक जितने वक्ताओं ने बोला है, उन सभी लोगों का भाषण बड़ोदरा पर केन्द्रित हुआ है।

[उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र) पीठासीन हुए।]

लेकिन मैं जानना चाहता हूं कि इस देश के अन्दर तो बड़ोदरा की घटना एक बहुत छोटी और मामूली घटना है, न कि दंगा है। इसलिए कि पूरे देश के अन्दर समय-समय पर बड़े साम्प्रदायिक दंगे होते रहे हैं। राजनीति की पूर्ति की खातिर हम सत्ता में कैसे आएं, उसके लिए भी इस देश के अन्दर समय-समय पर प्रयोग होते रहे। चाहे पंजाब का आतंकवाद हो, उसका भी बड़ा भारी प्रयोग हुआ। हम उसमें विस्तारपूर्वक जाना नहीं चाहते कि एक महान संत भिंडरावाले को आतंकवादी बनाकर कैसा दुरुपयोग किया गया और जब स्वार्थ की पूर्ति हो गई तो उसको आतंकवादी बताकर उसकी हत्या कर दी गई। इसी देश के अंदर स्वार्थ की पूर्ति के लिए लिट्टे की ट्रेनिंग चलाई गई। हम सब को मालूम है और मैं बड़ी जिम्मेदारी के साथ कह रहा हूं कि वह इसी देश के अंदर चलती रही। लेकिन शायद वे भूल गए कि जिनको हम ट्रेनिंग दे रहे हैं, जब हम उनको उनके देश के अंदर भेजेंगे, तो सावधानी भी बरतनी चाहिए क्योंकि कभी-कभी समझौते भी होते रहते हैं। लेकिन आपने बंदूकें दीं, कारतूस दिए, सामग्रियाँ दीं और बाद में अपनी सेना को भी भेज दिया। यानी हमारी बंदूक, हमारी सेना और हमारी ही गोली, यह कैसे चलता है? 1984 में दंगा होता है, कितने लोग मारे जाते हैं। क्या उस पर कभी कोई चर्चा हुई है? ...(व्यवधान)... अगर हुई भी है तो उस पर कहा गया ...(व्यवधान)... मैं उसी पर आ रहा हूं ...(व्यवधान)... मैं उसी पर आ रहा हूं ...(व्यवधान)... नहीं, चर्चा हुई है। जब चर्चा हुई है तो कहा गया कि जब पेड़ गिरता है तो धरती हिलती है, जब धरती हिलती है तो दरगाह भी हिलता है, तो मन्दिर नहीं हिलता, गुरुद्वारे नहीं हिलते, चर्च नहीं हिलते। हम देश को क्या संदेश देना चाहते हैं। एक तरफ आज दिल्ली के अन्दर तोड़-फोड़ का तांडव नृत्य होता रहा, हथौड़ा चलता रहा। इतने दिनों के बाद आप लोक सभा में बिल लाए। वह भी एक साल के लिए लाए। केवल दिखावटी काम किया। केवल एक साल के लिए लाए। गुजरात सरकार अगर अदालत के आदेश पर कार्य कर रही थी, तो कौन-सी आफत आ गई? ...(व्यवधान)... मैं कुछ लोगों से पूछना चाहता हूं। ...(व्यवधान)... आप कह रहे हैं, दरगाह का मैं भी सम्मान करता हूं, लेकिन मैं उनसे

पूछना चाहता हूं ...(**व्यवधान**)... कि मैं उन लोगों से पूछना चाहता हूं कि मैं मोहम्मद साहब को भी बहुत मानता हूं, मैंने उनके इतिहास को बहुत पढ़ा है, लेकिन वहां के शासक लोग उनकी प्रिय बेटी फातिमा की मजार को गिराकर वहां रास्ता बना देते हैं। मैं सदन से कहना चाहता हूं सदन में, मोहम्मद साहब की बेटी है और अगर उनकी बेटी फातिमा की मजार बनाने के लिए, कब्र को बनाने के लिए अगर ये लोग चलते हैं ...(**व्यवधान**)...

श्री अबू आसिम आज़मी: यह बिल्कुल गलत बात है, क्योंकि ऐसा नहीं हुआ है। ...(**व्यवधान**)...

† [شری ابوعاصم اعظمی : یہ بالکل غلط بات ہے، کیوں کہ ایسا نہیں ہوا ہے .....مداخلت.....]

श्री विनय कटियार: तो विनय कटियार चलने के लिए तैयार है। राजू जी, आपको मालूम नहीं है। आप साधारण नेता हैं। ...(**व्यवधान**)... और इसीलिए लोगों की समझ में नहीं आता। लोगों को जरा इतिहास पढ़ना चाहिए, जानकारी करनी चाहिए कि मोहम्मद साहब के सात मित्र हुआ करते थे। उन सात मित्रों में से सब के लिए उन्होंने पूजा स्थान बनाया। वर्तमान सरकारों ने सड़कों को चौड़ा करने के लिए, तीन-तीन स्थानों को, पूजा स्थानों को हटा दिया। मैं उसका समर्थक नहीं हूं। जो उन लोगों ने, शासकों ने किया होगा, मैं उनका समर्थक नहीं हूं, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि जो राज्य सभा में दरगाह के लिए आप* रहे हैं, कभी फातिमा के लिए आपने*? मैं वहां चलने के लिए तैयार हूं। माननीय गृह मंत्री जी बैठे हैं, आप जरा सब का पासपोर्ट बना दीजिए, स्पेशल जहाज़ बना दीजिए, हम सब लोग चलना चाहते हैं। मैं आपके नेतृत्व में चलना चाहता हूं।

श्री अबू आसिम आज़मी: आप वहां जा नहीं सकते ...(**व्यवधान**)...

† [شری ابوعاصم اعظمی : آپ وہاں جا ہی نہیں سکتے.....مداخلت.....]

श्री विनय कटियार: वह सेक्युलर कट्टी है, मैं उसकी बात कहना चाहता हूं। चलिए जरा वहां संघर्ष कीजिए। मैं भारत सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि क्या आप चलेंगे? क्या आप कभी इस देश के इतिहास को जानना चाहेंगे? किसने इस देश के अंदर इस देश को अपमानित करने का काम किया, किसने इस देश के अंदर ऐसी नींव डाली? क्या हम 713 के उस मोहम्मद बिन कासिम को भूल जाएंगे, जो विदेशी हमलावर आया था, जिसने गुजरात के अंदर तांडव-नृत्य किया था, जिसने हमारे मठों और मंदिरों को तोड़ा था? क्या हम उसको भूल जाएंगे? ...(**व्यवधान**)...

श्री धर्म पाल सभ्रवाल (पंजाब): सर, यह गलत बातें हो रही हैं। ...(**व्यवधान**)...

---

†Transliteration in Urdu Script.

*Expunged as ordered by the Chair.

श्री विनय कटियार: सर, अगर मैं गलत कह रहा हूं, ...(**व्यवधान**)...

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Let us talk about communal violence. ..(*Interruptions*).. We cannot discuss like this. ..(*Interruptions*)..

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): वड़ोदरा पर आ रहे हैं, आप इन्हें बोलने दीजिए। ...(**व्यवधान**)... राष्ट्रपाल जी, आप बैठ जाएं। ...(**व्यवधान**)... बैठिए। बोलिए कटियार जी। ...(**व्यवधान**)... आप बैठ जाइए।

श्री विनय कटियार: अगर मैं गलत हूं, तो बताना चाहूंगा कि डा॰ भीमराव अम्बेडकर की पुस्तक को लिखने का काम पहले महाराष्ट्र सरकार ने किया था और फिर इसके बाद सामाजिक न्याय मंत्रालय ने किया। उसमें डा॰ भीमराव अम्बेडकर कहते हैं ...(**व्यवधान**)...

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: कटियार जी, आपको आधा इतिहास ही मालूम है। ...(**व्यवधान**)...

श्री विनय कटियार: हो सकता है। आपसे बाद में हम सीख लेंगे, कोई हर्जा नहीं है। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (**श्री कलराज मिश्र**): आप अपना बोलिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री विनय कटियार: सर, डा॰ भीमराव अम्बेडकर लिखते हैं, राइटिंग एंड स्पीचेज में खंड 8, पृष्ठ 54-55 में लिखा है, भारत में पश्चिम से आतंकवादियों ने हमला किया। अब मैं "मुस्लिम" शब्द नहीं कहना चाहता हूं, उन्होंने "मुस्लिम" शब्द का प्रयोग किया। तो आतंकवादियों ने हमला किया, पहले मोहम्मद बिन कासिम ने किया। यह विनय कटियार नहीं बोल रहा है, भारत सरकार का जो सामाजिक न्याय मंत्रालय है, उसने यह पुस्तक प्रकाशित की है। फिर सन् 1001 में महमूद गजनवी आया। उसने तीस वर्षों तक ...(व्यवधान)

श्री अबू आसिम आज़मी : यह क्या बातें कर रहे हैं आप? ...(**व्यवधान**)

†[شری ابوعاصم اعظمی : یہ کیا باتیں کر رہے ہیں آپ......مداخلت......]

श्री विनय कटियार : आप इतिहास में जाइए। आप विदेशी हमलावरों से क्यों रिश्ता रखना चाहते हैं?

उपासभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र) : आप अपनी बात बोलिए। ...(**व्यवधान**)... बोलिए आप। ...(**व्यवधान**)

श्री विनय कटियार : आप विदेशी हमलावरों के साथ रिश्ता क्यों जोड़ना चाहते हो? ...(व्यवधान)... मैं विदेशी हमलावर की बात कह रहा हूं। ...(**व्यवधान**)...

†Transliteration in Urdu Script.

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry) : He is talking about the history or speaking on the subject. ..(*Interruptions*).. He should speak on the subject in this House. ..(*Interruptions*).. He is telling about the history. ..(*Interruptions*)..

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र) : उनको बोलने दीजिए। ...(**व्यवधान**)... वड़ोदरा इंसीडेंट पर आ रहे हैं। उनको बोलने दीजिए। आपको बीच में इंटरप्ट करने की जरूरत नहीं है। आप बैठ जाइए। ...(**व्यवधान**)... बैठ जाइए।

श्री विनय कटियार : बैठिए नारायणसामी जी। ...(**व्यवधान**)

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र) : आप बैठ जाइए। ...(**व्यवधान**)... बैठ जाइए।

श्री विनय कटियार : आपको अम्बेडकर साहब पर एतराज क्यों है? अगर अम्बेडकर साहब की लिखी हुई पुस्तक पर आपको एतराज है, तो मैं समझता हूं कि फिर आप लोगों को कहना चाहिए कि अम्बेडकर साहब ने, जिन्होंने यह काम किया, गलत किया। या तो आप कहिए और नहीं तो इस सत्य को स्वीकार करिए। यह कड़वा सत्य है, लेकिन सत्य है। इस इतिहास को ठुकराया नहीं जा सकता। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र) : आप वड़ोदरा पर आइए।

श्री विनय कटियार : नहीं, खाली पूरी वड़ोदरा पर बहस नहीं हो रही, माननीय उपसभाध्यक्ष जी।

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र) : चलिए, बोलिए।

श्री विनय कटियार : सर, यह खाली वड़ोदरा पर चर्चा नहीं है, बीच में वड़ोदरा भी आएगा। अभी मैं गुजरात पर चल रहा हूं।

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र) : अच्छा, आप बोलिए। हां, गुजरात पर बोलिए।

श्री विनय कटियार : महमूद गजनवी आए और 30 वर्षों तक 17 बार हमला किया और गुजरात के अंदर किया। ...(**व्यवधान**)... मैं गुजरात पर बोल रहा हूं? इसके बाद तो वड़ोदरा पर आऊंगा। ...(**व्यवधान**)... गुजरात के अंदर वड़ोदरा है, इसको स्वीकार करो। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र) : क्षत्रिय जी, आप बैठ जाइए। ...(**व्यवधान**)

श्री विनय कटियार : 1173 में गौरी आया। उसने हमला किया। ...(**व्यवधान**)... वड़ोदरा पर आ रहा हूं। अभी जरा घूम कर आ रहा हूं। ...(**व्यवधान**)... अभी उधर से आ रहा हूं। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र) : आप अपना यह कन्क्लूड करें। ...(**व्यवधान**)...

श्री विनय कटियार : 1173 में गौरी, फिर चंगेज खान आया, मंगोल झुंड आए और उन्होंने हमला किया। ...(व्यवधान)

SHRI V. NARAYANASAMY: He is talking about history. *...(Interruptions)*

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र) : उस तरफ आ रहे हैं। उनको बोलने दीजिए। मैंने कह दिया है उनको बोलने के लिए ...(व्यवधान)

श्री विनय कटियार : 1526 में बाबर आया। फिर 1738 में नादिरशाह आया। उसके बाद अहमद शाह अब्दाली आया। इतना ही नहीं, आप जरा इसको पढ़ लीजिए। आज हमारे जम्मू-कश्मीर के सांसद सरदार साहब नहीं हैं, वह बताते कि गुरू ग्रंथ साहिब में भी इस पर लिखा है। जरा आप उसको भी पढ़ लीजिए।

[Mr. Deputy Chairman, in the Chair]

यह देश लगातार सांप्रदायिक दंगों को झेलता रहा है, लेकिन मैं निवेदन करना चाहता हूं ...(व्यवधान)...

SHRI V. NARAYANASAMY: Are we discussing history or the communal violence?

श्री धर्म पाल सभ्रवाल: गुरु ग्रंथ साहिब में क्या लिखा है? उसमें लिखा है -

ईश्वर अल्लाह नूर उपाया, कुदरत दे सब बंदे।

एक नूर तो सब जग उपजयो, कौन भले कौन मंदे।

ऐसा गुरु ग्रंथ साहिब में लिखा है। ...(व्यवधान)...

श्री विनय कटियार: माननीय उपसभापति महोदय, गुजरात कांड हो जाता है। गुजरात कांड पहली बार नहीं होता है, गोधरा में, जहां तक मुझे याद आ रहा है, हो सकता है कि मैं गलत होऊं, जब मोरारजी भाई मुख्य मंत्री हुआ करते थे, उस समय दंगे हुए। कितने लोग मारे गए? उस समय लोक सभा में क्या इतनी बार चर्चा हुई, जितनी इस बार चर्चा हुई? किसने गोधरा कांड किया, किसने ट्रेन फूंकी, कौन था सभासद, डिप्टी मेयर किसका था, किसने कांड किया? ...(व्यवधान)... अगर वहां की सरकार कार्रवाई करती है तो उसको आप कहते हैं भंग करो, भंग करो। क्या अपराध किया था सरदार पटेल ने सोमनाथ मंदिर का निर्माण कराकर? क्यों नहीं *क्यों नहीं गुणगान करते सरदार पटेल का? अगर सरदार पटेल ने सोमनाथ मंदिर का निर्माण किया था, कोई गुनाह का काम नहीं किया था, तो अयोध्या में राम की जन्मभूमि पर राम मंदिर बनाने के लिए अगर विनय कटियार काम कर रहा है तो कोई अपराध नहीं कर रहा है। ...(व्यवधान)...

प्रो॰ अलका क्षत्रिय: मंदिर का निर्माण किया था ...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आजमी: आपका सपना कभी पूरा नहीं होगा। ...(व्यवधान)...

† [شری ابوعاصم اعظمی : آپ کا سپنا کبھی پورا نہیں ہوگا....مداخلت.....]

श्री विनय कटियार: आप थोड़ा धैर्य रखो। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: कटियार जी, आप मेहरबानी करके विषय पर बोलिए।

श्री विनय कटियार: कश्मीर में कितने मंदिर ...(व्यवधान)... देश का बंटवारा हो गया। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: विनय कटियार जी, देखिए, आपकी मेडन स्पीच है ...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आजमी: वातावरण खराब कर रहे हैं। ...(व्यवधान)...

† [شری ابوعاصم اعظمی : واتاورن خراب کر رہے ہیں....مداخلت.....]

श्री विनय कटियार: देश का बँटवारा हो गया ...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आजमी: यह क्या है, सर? ...(व्यवधान)...

† [شری ابوعاصم اعظمی : یہ کیا ہے سر ....مداخلت.....]

श्री उपसभापति: आजमी जी, आप बैठिए। आप बैठिए। ...(व्यवधान)... आप मेरी बात सुनिए ...(व्यवधान)...

श्री विनय कटियार: सच्चाई कड़वी होती है। ...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आजमी: कोई मंदिर नहीं बना सकता। ...(व्यवधान)...

† [شری ابوعاصم اعظمی : کوئی مندر نہیں بنا سکتا....مداخلت.....]

श्री उपसभापति: आजमी साहब, आप बैठिए। आप बैठिए, मैंने आपको इजाजत नहीं दी है बोलने की। आप बैठिए। ...(व्यवधान)... विनय कटियार जी, आप मेरी बात सुनिए। आपकी मेडन स्पीच है। It is not correct that anybody आपको बीच में इंटरप्ट करे, इसलिए आप विषय पर बात करें, हम हिस्ट्री पर बात नहीं कर रहे हैं।

श्री विनय कटियार: मैं विषय पर ही बात कर रहा हूं, साम्प्रदायिक हिंसा की बात हो रही है। तो कार्टून बन गया। क्या हो गया उत्तर प्रदेश के अंदर? नहीं बनना चाहिए था कार्टून। कहा गया कि जिसने बनाया है, आप सजा दो। हमारे देश के अंदर तो नहीं बना, हमारे देश के लोगों ने तो

---

†Transliteration in Urdu Script.

नहीं बनाया, लेकिन आप सड़कों पर उतरकर दुकानें जला रहे हैं, हैदराबाद को आप जला रहे हैं और आपकी सरकार संरक्षण कर रही है! उत्तर प्रदेश में लखनऊ के अंदर आप जला रहे हैं, फतवा जारी कर रहे हैं और दूसरी तरफ, सीता माता का नग्न चित्र बनाने वाले को आप सम्मानित कर रहे हैं! यह कैसे चलेगा?

श्री अबू आसिम आजमी: कोई इसको एप्रीसिएट नहीं करता।

† [شری ابوعاصم اعظمی : کوئی اس کو اپریشی ایٹ نہیں کرتا۔]

श्री विनय कटियार: एक दूसरे के धर्म का सम्मान करना सीखो। यह नहीं चलेगा कि हम एक का तो सम्मान करें और दूसरे के धर्म का अपमान करें।

प्रो॰ राम देव भंडारी: क्या अमृत झड़ रहा है आपके मुंह से।

श्री विनय कटियार: भंडारी जी, आपके पास दूसरा भंडार है, आपके पास चारे का भंडार है।

प्रो॰ राम देव भंडारी: मैं तो आपकी प्रशंसा कर रहा हूं कि आपके मुंह से अमृत झड़ रहा है।

श्री विनय कटियार: यह जो हमने सीरियल गिनाया, यह साम्प्रदायिक हिंसा नहीं तो क्या है? 6 लाख लोग आज भी हिन्दुस्तान की सीमा पर घूम रहे हैं, क्या यह उनका देश नहीं था? क्या उनके परिवारों ने युद्ध नहीं किया? क्या उनकी मां-बेटियों ने अपनी मांग का सिंदूर नहीं लुटाया था? उनके बेटे क्या फांसी के फंदे पर नहीं चढ़े थे? भारत माता के पैरों में पड़ी हुई बेड़ियों और हाथों की हथकड़ियों को मुक्त कराने के लिए जिन्होंने सब कुछ न्यौछावर कर दिया, आज 6 लाख लोग, गृह मंत्री जी ...(**व्यवधान**)... यह भारत और पाकिस्तान का मामला है। ...(**व्यवधान**)...

श्री अबू आसिम आजमी: यह क्या है सर?

† [شری ابوعاصم اعظمی: یہ کیا ہے سر؟]

श्री उपसभापति: कटियार जी, आपका विषय क्या है?

श्री विनय कटियार: मैं गृह मंत्री जी से यह जानना चाहूंगा, ...(**व्यवधान**)... दंगे, दंगे, दंगे ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: देखिए, आप किसको एड्रेस कर रहे हैं, क्या विषय है आपका? कुछ तो होना चाहिए, विषय में कुछ कैमिस्ट्री या कुछ अर्थमैटिक्स होना चाहिए...(**व्यवधान**)...

SHRI ARUN SHOURIE : You did not ask this when Sitaram Yechury talked about the assassins of Mahatma Gandhi. That you will study. Now, you please study the Motion. ...*(Interruptions)*...

†Transliteration in Urdu Script.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The motion is communal violence in Vadodara and other parts of the country. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI BRINDA KARAT: When their leader can ...*(Interruptions)*...

SHRI ARUN SHOURIE: He is making his submission. ...*(Interruptions)*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, I cannot allow that for he is coming ...*(Interruptions)*... See, this is a Short Duration discussion, and, I cannot allow him. That is why, I am interested. ...*(Interruptions)*... I cannot allow him to take whatever time he wants. ...*(Interruptions)*...

श्रीमती वृन्दा कारत: वह सुना तो सकते हैं, लेकिन सुन नहीं सकते ...(व्यवधान)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I will be happy if the House permits by a Resolution to give whatever time. I am bound to do it 2½ hours. ...*(Interruptions)*...

श्री विनय कटियार: माननीय उपसभापति महोदय, मैं उसी बात पर आ रहा हूं।

उपसभापति जी, आज जो छ: लाख लोग घूम रहे हैं, जो निकाल दिए गए हैं, मैं उनकी बात नहीं कर रहा हूं। देश के बंटवारे के समय से लेकर आज तक भी जिनका निर्णय नहीं हो पाया है, उन्हें न तो पाकिस्तान की नागरिकता मिल रही है और न ही हिन्दुस्तान की नागरिकता मिल रही है। क्या उनके मन के अन्दर पीड़ा नहीं होती कि हमें भी यह चाहिए। वृंदा जी अभी खड़ी हो कर बात कह रही थीं, उनसे भी मैं यही कहूंगा कि इसमें क्या दोष है? क्या उन्हें जगह नहीं मिलनी चाहिए? क्या उन्हें भारत के अन्दर जगह नहीं मिलनी चाहिए? यह दी जानी चाहिए ...(व्यवधान)...

श्रीमती वृंदा कारत: किसको? आप किसकी बात कर रहे हैं?

श्री विनय कटियार: मान्यवर, आज उत्तर प्रदेश के अन्दर क्या हो रहा है? ...(व्यवधान)

श्री उपसभापति: देखिए, आप इन चीज़ों को जरूर डिस्कस कीजिए, लेकिन नोटिस देकर। आप जिस-जिस सब्जेक्ट को डिस्कस करना चाहते हैं, पहले नोटिस देकर आप उसे डिस्कस कीजिए।

श्री विनय कटियार: मैं दंगे के बारे में बोल रहा हूं। यह कह रहे थे कि धारा 356 का उपयोग होना चाहिए। अभी इन्होंने बोला, इन्होंने क्या किया? क्या उत्तर प्रदेश के अन्दर अब श्री राम का टोला नहीं निकलेगा? क्या उत्तर प्रदेश के अन्दर अब शंकर भगवान की पूजा नहीं

होगी? क्या वहां पर उनका अभिषेक नहीं होगा? वहां पर दंगा होगा और गोली चलेगी मऊ के अन्दर यही हुआ?

एक विधायक, मैं उनका नाम नहीं लूंगा क्योंकि वह हाउस में नहीं हैं, एक विधायक पुलिस की सुरक्षा में जिप्सी पर खड़े होकर घूम रहा है, दंगाई दंगे कर रहे हैं, लोग मारे जा रहे हैं, दुकानें लूटी जा रही हैं, एक ही सम्प्रदाय के लोग मारे जा रहे हैं, उनकी हत्याएं हो रही हैं, मार कर उन्हें नदी में डाला जा रहा है, उन्हें मार कर रेलवे लाइन के किनारे फैंका जा रहा है। क्या माननीय गृह मंत्री जी को इसकी जानकारी नहीं है? जब कभी इस हाउस में इस संबंध में चर्चा होती है, तब यह कह दिया जाता है कि यह राज्य का मामला है ...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आज़मी: मुझे फिर बोलना पड़ेगा, तब आप कहेंगे कि ...(व्यवधान)...

† | شری ابوعاصم اعظمی : مجھے پھر بولنا پڑے گا، تب آپ کہیں گے کہ......مداخلت..... |

श्री उपसभापति: नहीं, नहीं, आप बैठ जाइए ...(व्यवधान)... देखिए आप बैठ जाइए ...(व्यवधान)... उत्तर प्रदेश का नाम लेते हुए आप भी बात मत करिए ...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आज़मी: *

श्री उपसभापति: आप बैठ जाइए ...(व्यवधान)... Nothing will go on record. ...*(Interruptions)*...

श्री उपसभापति: देखिए, आप बैठिए, आप बैठिए ...(व्यवधान)...

श्री विनय कटियार: माननीय उपसभापति महोदय, अलीगढ़ में क्या हुआ? अलीगढ़ में हमारे दलित विधायक श्री देवकी नन्दन जी के बेटे की हत्या करके उसे कब्रिस्तान में ले गए और वहां उसे गाढ़ दिया गया, दफ़ना दिया गया। उन्हें यह पता करना भी उचित नहीं लगा कि यह हिन्दू है या मुसलमान। वह भारतीय जनता पार्टी के दलित विधायक हैं और उनके बेटे को मुसलमान कह करके दफ़ना दिया गया, क्योंकि उत्तर प्रदेश सरकार से जिला अधिकारी के पास पैसा पहुंच गया और बवाल मच गया। वह तो एक पत्रकार ने फोटो छाप दिया और फिर उसे क़ब्र से निकाला गया। यह सब उत्तर प्रदेश के अन्दर क्यों हो रहा है?

यह जो आरक्षण हो रहा है, यह जो माइनॉरिटी के नाम पर आरक्षण दिया जा रहा है, उसके कारण ही अलीगढ़ के अन्दर साम्प्रदायिकता का एक विराट वट वृक्ष खड़ा कर दिया गया, उसी के कारण यह साम्प्रदायिक दंगा हुआ। हम जा रहे थे, क्या करने वाले थे, हमको रोक लिया गया, गिरफ्तार कर लिया गया। क्यों गिरफ्तार कर लिया गया? देश के अंदर आज उत्तर प्रदेश में हर मंदिर पर हमला हो रहा है। क्यों? हमारी सरकार रही हो, चाहे आज इनकी सरकार रही हो, मंदिरों

†Transliteration in Urdu Script.

*Not recorded.

पर हमला हो रहा है। आज रघुनाथ जी के मंदिर पर हमला होता है, गुजरात के अक्षरधाम मंदिर पर हमला होता है। ...(**व्यवधान**)... मैंने वहीं बोला है, आप जरा सुनिए, मैंने वहीं बोला है। अयोध्या के अंदर राम की जन्म भूमि पर हमला हो रहा है, हनुमान गढ़ी पर हमला हो रहा है, अयोध्या के रेलवे स्टेशन पर हमला हो रहा है, मेरे घर पर बम रखा जा रहा है, बनारस के अंदर संकट मोचन मंदिर पर हमला हो रहा है, रेलवे स्टेशन पर हमला हो रहा है। एक जामा मस्जिद पर हमला हुआ, मैं उसकी भी निन्दा करता हूं, लेकिन गृह मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि क्या आपने सी॰बी॰आई॰ की जांच का आर्डर दिया? सी॰बीआई॰ की जांच होनी चाहिए, क्योंकि दूध का दूध और पानी का पानी होना चाहिए। मैं यह भी कहना चाहता हूं कि बनारस के अंदर संकट मोचन मंदिर पर हमला होता है तो हमलावरों के चित्र जारी करते हो, लेकिन जब जामा मस्जिद पर हमला होता है तो चित्र आपने जारी क्यों नहीं किया? आप बार-बार गुजरात, बार-बार गुजरात का *बोल करके नरेन्द्र मोदी की सरकार को गिराना चाहते हैं। उस सरकार को गिराने के गंभीर परिणाम होंगे। आप वहां किसी भी कीमत पर नहीं जीत सकते हैं। वहां अगर एक-दो घटना हो गईं तो उन पर सरकार ने मुस्तैदी से काम किया, हम उन बातों को दोहराना नहीं चाहते हैं। उपसभापति महोदय, क्योंकि जिन लोगों ने जो बातें कहीं, लेकिन हमारे गृह राज्य मंत्री जी जाकर क्या कहते हैं, वह कहते हैं, केवल एक दरगाह की चर्चा करते हैं, उसको गिराने की बात कही, लेकिन उस साईं बाबा के स्थान की चर्चा नहीं करते जब पत्रकार उनसे पूछते हैं कि जिस स्थान पर, जहां साईं बाबा जाते रहे हैं, क्या उस स्थान को भी गिराया गया? उनसे जब पूछा था तो उन्होंने बताया कि मुझे तो दरगाह के विषय में बताया गया। उनको मंदिर दिखाई नहीं देता, उनको सत्य साईं का स्थान दिखाई नहीं देता।

उत्तर प्रदेश के अंदर दंगा होता है, किसी मंदिर पर हमला होता है तो हमारे देश का गृह राज्य मंत्री कहता है कि हमको तो पहले से सूचना थी। अगर तुमको सूचना थी तो आप क्या कर रहे थे? राम जन्म भूमि पर आपको सूचना थी तो आप क्या कर रहे थे? संकट मोचन मंदिर की आपको सूचना थी तो आप क्या कर रहे थे? रेलवे स्टेशन पर बम रखे जाने की सूचना थी तो आप क्या कर रहे थे?

श्री उपसभापतिः आप समाप्त करिए कटियार जी। ...(**व्यवधान**)...

श्री विनय कटियारः मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर सरकार इसी प्रकार से ...(**व्यवधान**)... हम केवल गोधरा की चर्चा करेंगे तो मामला दूसरा हो जाएगा। इसलिए हम नहीं चाहते कि बनर्जी रिपोर्ट में क्या किया। हम नहीं चाहते कि किस प्रकार से लालू जी ने ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापतिः अब आप समाप्त कीजिए। ...(**व्यवधान**)... मुझे स्टॉप करना पड़ेगा मजबूरन, मैं नहीं चाहता। देखिए, वक्त का ख्याल रखना चाहिए। ...(**व्यवधान**)...

*Expunged as ordered by the Chair.

प्रो॰ राम देव भंडारी: महोदय, ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : भंडारी जी, आप बैठिए।

श्री विनय कटियार: इसलिए उपसभापति महोदय, यह छोटी-छोटी बात को लेकर के इस विकास के कार्य को रोका जाए, यह अच्छा नहीं है, यह हम नहीं कर रहे हैं। यह इनकी पत्रिका है राजीव गांधी फाउंडेशन की, वह कह रही है, वह तारीफ कर रही है, इनके नेता तारीफ कर रहे हैं। जिनको नहीं मालूम, जिनको अच्छा ही नहीं लग रहा है नरेन्द्र मोदी का चेहरा उसके लिए हम क्या करें। चेहरा अच्छा नहीं लग रहा है अपना चेहरा बदल लें, तो हम क्या कर सकते हैं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री उपसभापति: धर्म पाल जी, पांच मिनट।

श्री रुद्रनारायण पाणि: ये बिल्कुल कम्युनल भड़काऊ भाषण देते हैं ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आप बैठिए, आप बैठिए। कोई भी भड़काऊ भाषण देगा तो हम यहां देखने के लिए हैं। आप बैठिए। ....(**व्यवधान**)... पाणि जी, आप बैठिए ...(**व्यवधान**)... आज़मी जी, आप चेयर से कोआपरेट कीजिए, मेहरबानी से आप बैठिए। अब मैंने उनको बुला दिया है। ...(**व्यवधान**)... पहले उनको खत्म करने दीजिए।

श्री धर्म पाल सभ्रवाल: महोदय, मैंने इस चर्चा के लिए नोटिस भी दिया था। आपने मेरे को समय दिया, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री उपसभापति: सिर्फ पांच मिनट, इससे ज्यादा मत लीजिए, क्योंकि समय बहुत हो गया है।

श्री धर्म पाल सभ्रवाल: कटियार जी ने हिन्दुस्तान की हिस्ट्री के बारे में बोला है कि हिन्दुस्तान पर किसने हमला किया, किसने क्या किया ....(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: वह हिस्ट्री मौजूद है, कौन-कौन किस तरह पढ़ना चाहता है वह पढ़ता है। ....(**व्यवधान**)...

श्री धर्म पाल सभ्रवाल: मैं इस चर्चा में नहीं जाऊंगा। मैं हमले वाली बात में नहीं जाता, न मैं दंगे की बात में जाऊंगा। मैं यह कहूंगा कि जो भारत की सभ्यता और संस्कृति है, इसमें तो हमने सभी का भला चाहा है। कृष्ण भगवान ने गीता में कहा है कि यह सारा विश्व ही एक कुटुम्ब है हम सारे विश्व के सदस्य हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री रुद्रनारायण पाणि: इसीलिए मंदिर को तोड़ दिया। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: पाणि जी, आप सुन लीजिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री धर्मपाल सभ्रवाल: आप मेरी बात सुन लीजिए। मैं तोड़ने की बात नहीं कर रहा हूं, मैं जोड़ने की बात कर रहा हूं। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: पाणि जी, पहले थोड़े दिन तो आप डिसिप्लिन में हो गये थे, अब क्या हो गया है? ...**(व्यवधान)**...

श्री धर्म पाल सभ्रवाल: आप बात सुनिये। ...**(व्यवधान)**... आप तोड़ते हैं और हम जोड़ते हैं। सारा विश्व हमारा एक कुटुम्ब है, यह भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है। इसी तरह से इन्होंने बात कही थी कि यहां सरदार जी नहीं हैं, तो गुरुवाणी में क्या लिखा है, गुरुवाणी में भी वहीं लिखा है, जो हमारे पूर्वजों ने कहा है। नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणें सरबत दा भला। असी सारेंयां दा भला मंगदे हां। यह हमारे हिन्दुस्तान की सभ्यता और संस्कृति है। चाहे हम गुरुग्रंथ साहब को लें, चाहे गीता को लें, चाहे आंजील को लें, चाहे कुरान को लें, उन सभी में एक ही उपदेश है सत्य और अहिंसा का है। किसी ने भी इसका विरोध नहीं किया। सभी ने सत्य और अहिंसा के बारे में कहा है। इस देश का जो धर्म है, वह भी सत्य और अहिंसा है। जो सनातन धर्म है, वह सत्य और अहिंसा है और यह जो हिन्दू है, यह एक समाज है। हिन्दू का अर्थ है, इसका यदि संधि विच्छेद करें, तो हिंसा से दूर, हिन्दू जो भी व्यक्ति हिंसा से दूर रहता है, वह हिन्दू है। यह बड़ के समान धर्म है, जैसे उसकी शाखाएं निकलकर जमीन में लग जाती हैं और फिर वही बड़ बन जाता है, इसी तरह से जो इस्लाम है, ईसाई मत है और जो जैन मत है, बौद्ध मत है, सिख मत है, इन्होंने भी सनातन का ही प्रचार और प्रसार किया, सत्य और अहिंसा का प्रचार-प्रसार किया। इसीलिए इस देश का नाम हिन्दुस्तान रखा गया। वह स्थान, वह देश, जिसमें हिन्दू रहते हैं, जो हिंसा से दूर रहते हैं। अहिंसा पर ही चलकर इस देश को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने आज़ाद करवाया। ...**(समय की घंटी)**... आज जो साम्प्रदायिकता की आग फैल रही है, जो साम्प्रदायिकता का जहर फैल रहा है, इसको कैसे रोका जा सकता है, अगर हम अपने-अपने ईष्ट को मानते हैं, उसके आधार पर चलकर हिंसा से दूर रहने की बात करें, तभी हम इसका कोई समाधान निकाल सकते हैं। लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है। हम धर्म को अपनी राजनीति के लिए इस्तेमाल करते हैं और लोगों को उकसाने की बात करते हैं। आज गुजरात की बात हो रही है, वड़ोदरा की बात हो रही है। इससे पहले भी वर्ष 2000 में जो दंगे हुए हैं, वे भी एक सोची-समझी साजिश थी। किस तरह से वह साजिश हुई, उसके बारे में रिपोर्ट आई है, हिन्दुस्तान के लोगों के सामने रिपोर्ट आई है, सारी दुनिया के लोगों के सामने रिपोर्ट आई है और उसी को देखते हुए, हमारे गुजरात के मुख्य मंत्री को अमेरिका वालों ने वीजा नहीं दिया। वीसा नहीं दिया। उस समय इस बात की बड़ी चर्चा हुई कि देश के एक स्टेट के चीफ मिनिस्टर को वीसा नहीं दिया गया। उसके बाद वह लिस्ट भी आयी कि कौन-कौन सी लिस्ट आतंकवादियों के नाम की है। **(समय की घंटी)** इसी तरह यह जो हुआ, उस समय उन्होंने देखा ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: धर्म पाल जी, समाप्त कीजिए।

श्री धर्म पाल सभ्रवाल: जब हम राजनीति को धर्म के साथ जोड़कर चलते हैं तो फिर हिंसा होती है,साम्प्रदायिक हिंसा होती है। आज जो बड़ौदा की बात है, उससे पहले एक समझौता हुआ। यह बात कही कि 42 मंदिर थे। वे मंदिर नहीं थे, डैरी थे। छोटे-छोटे मंदिर होते हैं, जो घरवालों ने अपने घर के बाहर अपने लिए बनाए होते हैं। वे बड़े मंदिर नहीं थे। इसी तरह से अल्पसंख्यक समुदाय वालों ने भी अपने घर के बाहर कुछ कब्रें बनायी हुई थीं। वे मजारें नहीं थीं। समझौता हुआ कि उनको उठा दिया जाए। इसी तरह से इस मजार का समझौता हुआ कि डेढ़ फुट मजार उसमें आती है। ...(**व्यवधान**)...

श्री विजय कुमार रूपाणी: कोई समझौता नहीं हुआ। ...(**व्यवधान**)...

श्री धर्म पाल सभ्रवाल: डेढ़ फुट मजार आती है। ...(**व्यवधान**)... यह प्रशासन के साथ समझौता हुआ है। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: वे बोल रहे हैं, समझौता हुआ है। ...(**व्यवधान**)... आप नहीं बोल रहे हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री धर्म पाल सभ्रवाल: प्रशासन के साथ समझौता हुआ कि डेढ़ फुट मजार आती है। ...(**व्यवधान**)...

एक माननीय सदस्य: कोई समझौता नहीं हुआ। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: अब उसे छोड़िए ...(**व्यवधान**)... उनको बोलने दीजिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री धर्म पाल सभ्रवाल: और उसको उठा देंगे तो किसी को ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आपने बोल दिया, कोई समझौता नहीं हुआ ...(**व्यवधान**)...

श्री धर्म पाल सभ्रवाल: तो कोई हर्ज नहीं है। ...(**व्यवधान**)... आप बैठिए। आपकी बात सुनी है।

श्री उपसभापति: सभ्रवाल जी, समाप्त कीजिए। Please conclude.

श्री धर्म पाल सभ्रवाल: महोदय, यह समझौता हो गया और उसके बाद ऊपर से आदेश आया ...(**व्यवधान**)...

श्री विजय कुमार रूपाणी: कोई समझौता नहीं हुआ। ...(**व्यवधान**)...

श्री रुद्रनारायण पाणि: किसके साथ हुआ? ...(**व्यवधान**)...

श्री धर्म पाल सभ्रवाल: कि इसको साफ कर दिया जाए। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: अब समाप्त कीजिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री धर्म पाल सभ्रवाल: अल्पसंख्यकों को भड़काने की बात की गयी। कहा कि उनको भड़काया जाए और हिन्दू-मुस्लिम फसाद हो जाएं इस तरह से जो वहां पर पुलिस वाले थे ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: प्लीज़ कनक्लूड कीजिए। नेक्स्ट। ...(**व्यवधान**)... Hon. Minister to lay the statement.

श्री धर्म पाल सभ्रपाल: वे भी इस तरह से लाठियां चला रहे थे ...(**व्यवधान**)... जैसे कि वे कहते हैं ...(**व्यवधान**)... कि गोधरा में जो पुलिस अफसरों ने काम किया था ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: अब प्लीज़ कनक्लूड कीजिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री धर्म पाल सभ्रवाल: उनको अच्छी-अच्छी पोस्ट्स मिली हैं, वे भी इसी तरह से कर रहे थे। ...(**व्यवधान**)... ये सभी सीन हमने देखें हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: प्लीज़, आप कनक्लूड कीजिए न। ...(**व्यवधान**)...

श्री धर्म पाल सभ्रवाल: जो है जो देश को तबाह करने वाली है, इस पर अंकुश होना चाहिए। ...(**व्यवधान**)... आपने अखबार पढ़कर सुनाई थी, मैं अखबार नहीं पढ़कर सुनाउंगा। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: सभ्रवाल जी, आप जो कहेंगे, वह रिकॉर्ड में नहीं जाएगा। ...(**व्यवधान**)... देखिए, आपने पांच मिनट का समय मांगा। ...(**व्यवधान**)... यह सही नहीं है ...(**व्यवधान**)... अब समाप्त कीजिए। ...(**व्यवधान**)... देखिएं, यह सही बात नहीं है। ...(**व्यवधान**)...

श्री धर्म पाल सभ्रवाल: *

श्री रूद्रनारायण पाणि: *

श्री उपसभापति: अब समाप्त कीजिए। ...(**व्यवधान**)... Nothing will go on record. He is not listening. *(Interruptions)* पाणि जी का भी नहीं जाएगा, किसी का भी नहीं जाएगा ...(**व्यवधान**)... रिकॉर्ड में नहीं जाएगा। ...(**व्यवधान**)... प्लीज़ कोऑपरेट कीजिए। देखिए, आपने पांच मिनट के लिए रिक्वेस्ट की, मैंने 12 मिनट दिए हैं। उसके ऊपर भी आप नहीं समाप्त कर रहे। ...(**व्यवधान**)... आप अपने व्हिप से पूछ लीजिए, चेयर से मत

*Not recorded.

पूछिए ...(व्यवधान)... आप समाप्त कीजिए न। ...(व्यवधान)... I think there is no discipline in the House. Please. यह सही बात नहीं है। ...(व्यवधान)...

STATEMENT BY MINISTER

Status of Implementation of the Recommendations Contained in 169th Report of Department-Related Parliamentary standing Committee on Industry

THE MINISTER OF HEAVY INDUSTRIES AND PUBLIC ENTERPRISES (SHRI SONTOSH MOHAN DEV): Sir, I lay a copy of the statement.

SHORT DURATION DISCUSSION

Communal Violence in Vadodara and other Parts of the Country

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI SHIVRAJ V. PATIL): Sir, after such a debate, per force, I should be very brief. We had a debate yesterday in this House, and the other House also, with respect to the incident that had taken place in one part of our country. Today, we are discussing the incidents that have taken place in other parts of our country. Yesterday, the debate was sobre, and probably, briefer than this one. Today, some heat was generated at the beginning, but then, some very good points have been made by hon. Members, while expressing their views on the incidents in Vadodara and other places. Sir, what happened in Vadodara? the Municipal Corporation decided to remove some structures which were standing at some palces in the city in order to implement their plan, and the information which is given to us shows that they did remove some structures which were standing at the places where they should not have been there, and from where they were causing some obstruction to the traffic. When this place was approached by the municipal authority and they tried to demolish that structure, people who had collected there, objected to it, and a situation became. difficult in the middle of the night. I received a telephone call from one of the collegagues here that Vadodara was facing grave difficulties and people were rioting over there. It was possible for the Home Secretary and me also to communicate with the Chief Minister around 2 o'clock in the night. We